॥ श्रीगणेशायनमः ॥

रसराज ॥

जिसमें

नायकाभेद दोहे और कबित्त आदि सु
ललित छन्दोंमें वर्णित हैं

जिसको

स्वस्तिश्री गुणगण मण्डली मण्डन महामहोपाध्याय
श्रीकवि मतिराम जीने रसिक जनोंके मनोरञ्जनार्थ
वर्णन कियाहै

उसीको

प्रोप्राइटर सेठ टीकाराम जीने निज ज्ञानभास्कर प्रेस
बाराबंकी में छापकर प्रकाशित किया।

"ज्ञान भास्कर प्रेस बाराबंकी"

सन् १९०९ ई०

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ रसराज ॥

सवैया ॥

ध्यावैं सुरासुर सिद्ध समाज महेशहिं आदि महा मुनि ज्ञानी । योगमें यंत्र में मंत्र में तंत्र में गावें सदा कृति शेष भवानी । संकट भाजन आनन की द्युति सुन्दर दण्ड उदण्ड सो जानी । ध्याय सदा पदपङ्कज को मतिराम तबै रसराज बखानी ॥ १ ॥

दोहा ॥ श्रीगुरुचरण मनाइकै गणपति को उर ध्याय । रसिक हेतु रसराज किय सुकबिन को सुखदाइ २॥ प्रार्थना, दोहा ॥ कबित्तार्थ जानौं नहीं कछुक भयो संबोध । भूल्यो भ्रमते जो कछुक सुकबि पढ़ेंगे शोध ३ बरणि नायका नायकनि रच्यो ग्रंथ मतिराम । लीला राधारमण की सुन्दर यश अभिराम ४ होत नायका नायकहिं आलम्बित शृङ्गार । ताते बरणौं नायका नायकमति अनुसार ५

उपजत. जाहि बिलोकिकै चित्त बीच रस भाव। ताहि बखानत नायका जे प्रबीणकबि राव ६ ॥ उदाहरण। सवैया॥ कुन्दनको रँगफीको लगै झलकै अति अंगन चारु गुराई। आंखिनमें अलसानि चितौनिमें मंजु बिलासनकी सरसाई। कोबिन मोल बिकात नहीं मतिराम लहे मुसकान मिठाई। ज्यों ज्यों निहारिये नेरे ह्वै नयननि त्यों त्यों खरी निकरैसी निकाई ७॥ दोहा॥ जालरंध्रमग ह्वै कढ़े तिय तन दीपति पुंज। झिंझियाकैसो घट भयो दिनहीं में बनकुंज ८॥ कही नायका तीन विधि प्रथम स्वकीया मान। परकीया पुनि दूसरी गणिका तीजी जान॥ ९॥ स्वकीया लक्षण। दोहा॥ लाजवती निशि दिन पगी निज पति के अनुराग। कहत स्वकीया शीलमय ताको पति बड़ भाग १०॥ उदाहरण। सवैया॥ संचि बिरंचि निकाई मनोहर लाजाति मूरतिवंत बनाई। तापर तो बड़ भाग बड़े मति राम लसै पति प्रीति सुहाई। तेरे सुशील सुभाव भटू कुल नारिन को कुल कानि सिखाई। तेही जनै पति देवत के गुण

गौरि सबै गुण गौरि पठाई ॥ ११ ॥ दोहा जान-
ति सौति अनीति है जानति सखी सुनीति।
गुरुजन जानति लाज है प्रीतम जानत प्री-
ति १२ ॥ दोहा ॥ त्रिविध स्वकीया जानियो
प्रथमहिं मुग्धा नाम। मध्या पुनि प्रौढ़ा
गिनो बरणत कबि मति राम १३ अभिनव
यौवन आगमन जाके तन में होय। ताको
मुग्धा कहत हैं कबि कोबिद सब कोय १४
उदाहरण। कवित्त ॥ नेक मन्द मधुर कपोल मुस-
क्यान लागे नेक मंद गमन गयंदन की
चालभो। रंचहून ऊंचो लगो अंचल उरोज
नके अंकुर निबंक डीठि नेकसो बिसालभो।
मति राम सुकबि रसीले कछु बैनभये बदन
शृंगार रसबेलि आल बाल भो। बालतन
यौबन रसाल उलहत लखि मौतिन के साल
भो निसाल नंदलाल भो १५ ॥ दोहा ॥ अ-
भि नवयौवन ज्योति सों जग मग होत
बिलास। तियके तन पानिय बढ़े पियके
नयननि प्यास १६ दोहा ॥ मुग्धाके है भेद
बर भाषत सुकबि सुजान। एक अज्ञातक
यौवना ज्ञात यौवना आन १७ ॥ अज्ञात यौवना

लक्षण । दोहा ॥ निज तन यौवन आगमन जो नहिं जानत नारि । सो अज्ञातक यौवना कवि बरणत निरधारि १८ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ खेलत चोर मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले घोस की नाईं । आली कहा कहौं एक भई मति राम नई यह बात तहांईं । एकहि भौन दुरे इक संगही अंग सों अंग छुवायो कन्हाई । कंप छुट्यो घनस्वेद बढ़्यो तनरोम उठ्यो अंखियां भरि आई १९ ॥ दोहा लाल तिहारे संग में खेलैं खेल बनाइ । मूंदत मेरे नयनहौ करन कपूर लगाइ २० ॥ ज्ञात यौवना लक्षण । दोहा ॥ निज तन यौवन आगमन जानि परतिहै जाहि । कवि कोविद सब कहत हैं ज्ञात यौवना ताहि २१ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ काननलौं लागे ससकान प्रेम फागे लोनेलाल भरे लागे लोचेन अनंगते । भारु धरि भुजनि डुलावति चलसि मन्द और ओप उलहत उरज उतंगते । मतिराम यौवनके पवन झकोर आय बढ़के सरस रस तरल तरंगते । पानिय बिमलकी झलक झलकन लागी काईसी गई है लरिकाई कढ़ि

अंगते २२ ॥ दोहा ॥ इते उते सचकित चितै चलत डुलावत बाह। दीठि बचाई सखिन की छलुक निहारत छांह २३ ॥ अथ नवोढ़ा लक्षण दोहा ॥ मुग्धा जेहि भय लाजयुत रतिन चहै पति संग। ताहि नवोढ़ा कहतहैं जे प्रवीण रसरंग २४ ॥ उदाहरण। सवैया ॥ साथ सखी के नई दुलही को भयो हरिको हियो हेरहि मंचल। आयगये मतिराम तहां घरजानि इकन्त आनन्दसों चंचल। देखतही नँदलाल कोबालके पूरिरहे अँसुवानि दृगंचल। बात कही न गई सुरही गहि हाथ दुहौसों सहेलीको अंचल २५ ॥ दोहा ॥ ज्यों ज्यों परसे लालतन त्यों त्यों राखै गोइ। नवल बधू डर लाज ते इन्द्र बधूसी होइ२६॥ अथ विश्रब्धनवोढ़ा लक्षण। दोहा॥ होय नवोढ़ा के कछुक प्रीतमसों परतीत। सो विश्रब्धनवोढयों बरणत कवि रसरीति२७॥ उदाहरण। सवैया॥ केलि की राति अघाने नहीं दिनहीमेंलला पुनि घात लगाई। प्यास लगी कोउ पानी दैजाउ यों भीतर बैठिकै बात सुनाई। जिठानीपठायगई दुलही हँसि हेरे हरैं मतिरामबुलाई। कान्हके

बोलमें कानन दीन्हो सुगेहके देहरीमें धरि आई २८ ॥ दोहा ॥ प्रीतम तुम्हरी सेजपर हौं आवत नँदलाल। दयागहो बात न कहो दु-ख न दीजिये लाल २९ ॥ अथ मध्यालक्षण। दोहा ॥ जाके तनमें होतहै लाज मनोज समान। तासों मध्या कहतहैं कवि मतिराम सुजान ३० ॥ उदाहरण। कवित्त ॥ चित्तमें बिलोकतही लालको मदन बाल जीतेजेहि कोटिचन्द शरद पुनीनके। मुसक्यान अमल कपोलनि के रुचि वृन्द चमके तखोननिके रुचिर चुनीनके। प्रीतम निहारयो बांहनहत श्रवा-नकहीं जामे मतिराम मन सकल मुनीनके। गाढेगही लाजमैन कण्ठह्वै फिरत बैन मूल ह्वैफिरत नैन बारि बरुनीनके ३१ ॥ दोहा ॥ केलि भवनकी देहरी खड़ीबाल छबि नौल। काम कलित हियको लहै लाज ललित दृग कौल ३२ ॥ अथ प्रौढ़ालक्षण। दोहा ॥ निजपति सों रति केलिकी सकल कलानि प्रवीन। तासों प्रौढ़ा कहतहैं जे कवित्तरस लीन ३३ ॥ उदाहरण। सवैया ॥ प्राणप्रिया मन भावन संग अनंग तरंगनि रंग पसारे। सारी निशामति

राम मनोहर केलिके पुंज हजार उचारे। होत प्रभात चल्यो कहे प्रीतम सुंदरिके हियमे दुख भारे। चन्द्रसों आनन दीपसि दीपति श्याम सरोजसे नैन निहारे ३४॥ दोहा ॥ लपटानी अति प्रेमसों दैउर उरज उतंग घरीएकलौ छुटपर रही लगीसी अंग ३५॥ अथ धीराभेदलक्षण। दोहा ॥ मध्या प्रौढा मानमें तीनभांति पुनिजानि। धीरा बहुरि अधीर तिय धीरा धीरा मानि ३६॥ अथ मध्याधीरालक्षण। दोहा ॥ बचननकी रचनानिसोंपियहि जनावै कोप। मध्या धीरा कहतहैं ताहि सुमति रसचोप ३७॥ उदाहरण। कवित्त ॥ तुमकहाकरो कहूँकामते अटकिपरे तुम्हें कौन दोष सोतो आपने योंभागहै। आये मेरे भौनबड़े भोर उठि प्यारहीमें अति हरबरन बनाय बांधी पागहै। मेरेही वियोग रहे जागति सकैलराति गात अलसात मेरो परम सुहागहै। मनकी जानी प्राणप्यारे मतिराम इह नैननहीं माहिं पाइयतु अनुराग है ३८॥ दोहा ॥ अजों उड़ावतहो नहीं पीर न होत सभाग। ठौर ठौरया भौरके डसे

अधर दलदाग ३९ ॥ अथ मध्याअधीरालक्षण । दोहा ॥ मध्या कही अधीरतिय बोलै बोल कठोर। पियहि जनावै कोपयों बरणत कवि शिर मोर ४० ॥ उदाहरण । सवैया ॥ कोऊनहीं बरजे मतिराम रहौ तितही जितही मनभायो। काहेको सौंहै हजार करो तुमतौ कबहूं अपराध नठायो। सोवनदीजै न दीजै हमैं दुख योंहींकहा रसबाद बढ़ायो। मानरह्यो इनहीं मनमोहन माननीहोइ सोमान मनायो। ४१ ॥ दोहा ॥ बलय पीठि तरवन भुजन उर कुच कुंकुम छाप। तिते जाव मनभावते जिते बिकाने आप ४२ ॥ अथ मध्याधीराधीरलक्षण । दोहा ॥ मध्या धीरा धीर तिय ताहि कहत सबकोय। पियसौं कहिके बचन कछु रोष जनावै रोय ४३ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ आजु कहा तजि बैठीहौ भूषण ऐसेही अंग कछू अरसीलो। बोलत बोल रुखाईलिये मतिराम सुनेते सनेह रसीलो। क्योंन कहोदुख प्राणप्रिया अंसुवानिरहे भरिनैन लजीलो। कौन तुम्हैं दुखहै जिनके तुमसे मनभावन छैल छबीलो ४४ ॥ दोहा ॥ तुमसों कीजैमा-

न क्यों बहुनायक मनरञ्ज। बात कहत यों बोलिकै भरिआये दृग कञ्ज ॥ ४५ ॥ अथ प्रौढ़ाधीरालक्षण । दोहा ॥ पियसों प्रकट न रिसकरै रतितेरहै उदास। प्रौढ़ाधीराजानियेसो निज सुमति बिलास ४६ ॥ उदाहरण । कबित्त ॥ वैसेही चितै कै मेरे चित्त को चुरावती हौ बोलती हौ वैसेही मधुर मृदुबानिसों । कबि मतिराम अङ्क भरत मयङ्क मुखी वैसेही रहति गहि भुज लतिकानिसों । चूमति कपोलपान करत अधररस वैसेही निहारी रीति सकल कलानिसों । कहा चतुराई ठानियत प्राण प्यारी तेरो मान जानियत रूखी मुख मुसक्यानिसों ४७॥ दोहा ॥ ढीली बांहनसों मिली बोली कछु न बोल। सुन्दरि मान जनाइहै लियो प्राण मतिमोल ४८॥ अथ प्रौढ़ाअधीरालक्षण। दोहा डरदेके प्रियको प्रियदेय सुमनकी मारु॥ प्रौढ़ाऽधीरा कहतहै बोहि सुकवि मतिचारु ४९॥ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ जाके अंग अंगकी निकाई निरखत आली वारने अनंगकी निकाई कीजियतुहै। कवि मतिराम जाकी चाह ब्रज नारिनको देह असुवानके प्रवाह भीजियतु

है। जाके बिनु देखे न परत कल तुमहूको जाके बैन सुनत सुधासों पीजियतुहै। ऐसे सुकुमार पियनन्दके कुमारकी यों फूलन कीमालनकी मारु दीजियतुहै ५० ॥ दोहा ॥ जहां जहां सखिदेततू फूल मालकी मारु। तहां २ नँदलालके उठेरोम तनु चारु ५१ ॥ अथ प्रौढ़ाधीराधीर लक्षण । दोहा ॥ रतिउदास कैनाहको डर दिखलावै बाम। प्रौढ़ा धीराधीर तिय बरणत कबि मतिराम ॥ ५२ ॥ उदाहरण । सवैया॥ पीतम आये प्रभात पिया कहौ राति रमे रति चिह्न लियेहीं। बैठिरही पँलगापर सुंदरिनैन नवाइके धीरधरेहीं। बांहगहै मतिरामकहै न रही रिसमानिनिके हठकेहीं। बोली न बोल कछू सतरायपै भौंहें चढ़ाय तकी तिरछेहीं ५३ ॥ दोहा ॥ आवत उठि आदर कियो बोले बोल रसाल। बांह गहत नँदलालके भये बाल दृगलाल ॥ ५४ ॥ अथ ज्येष्ठाकनिष्ठालक्षण । दोहा ॥ बरणत ज्येष्ठ कनिष्ठिका यह द्वै ब्याही नारि। प्रथम पियारी दूसरी घटि प्यारी निरधारि ५५ ॥ उदाहरण । कबित्त ॥ बैठी एक सेजपै सलोनी मृगनयनी दोऊ

आनि तहां प्रीतम सुधासमूह बरसे। कवि मतिराम ढिग बैठ्यो मनभावनके दुहूँके हियमें अरविंद मोद सरसे। आरसीदे एक सों कह्योयों निजमुख लख्यो अरविन्दबारि-ज बिलास बरदरसे। दरपसों भरी जौलौं दरपन देखतौलौं प्यारे प्राणप्यारीके उरो-ज हरिपरसे ५६ ॥ दोहा ॥ बेनीगूंधत एककी नन्दलाल चितलोल। चूमत प्यारीके अधर बिहँसत गोल कपोल ५७ ॥ अथ परकीयावर्णन । दोहा

प्रेमकरै परपुरुषसों परकीयासो जानि। दोय भेद उढ़ाप्रथम बहुरि अनूढ़ा मानि ५८ ॥ व्याही और पुरुषसों औरसों रसलीन। उढ़ा तासों कहतहैं कवि पण्डित परवीन ५९ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ क्यों इन आंखिनसों निरशङ्कह्वै मोहनको तन पानिय पीजे। नेकु निहारे कलंक लगै इहि गांव बसे कहु कैसे कजीजे। होतरहै मनयोंमतिराम कहूंबन जायबड़ो तपकीजे। ह्वैबनमाल हियेलगिये अरु ह्वैमुरली अधरा रसलीजे ६० ॥ दोहा ॥ कन्त चौकसी मन्तकी बैठी गांठि जुराय। देखिपरोसी कोपिया घूंघटमें मुसकाइ ६१॥

अनूढालक्षण । दोहा ॥ अन ब्याही कहुपुरुषसों अनुरागी जोहोइ । ताहि अनूढ़ा कहतहैं कवि कोविद सब कोइ ६२ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ गोप सुता कहैं गौरि गोसाइँनि पायँ परों बिनती सुनि लीजे । दीन दयानिधि दासी के ऊपर नेकु सुचित्त दयारस भीजे । देहि जो ब्याहि उछाह सो मोहन मात पिताहु के सोमन कीजे । सुन्दर सांवरो नन्द कुमार बसे उर में बरु सो बरु दीजे ६३ ॥ दोहा ॥ मैं सुनिआई नन्द घर अब तू होहु निशङ्क । राधे मोहन ब्याहते जैहैं धोय कलङ्क ६४ ॥ परकीया और भेद दोहा ॥ परकीया के भेद इह गुप्त जो प्रथम बखानि । बहुरि बिदग्धा लक्षिता कुलटा मुदिता मानि ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ और अनुसयना कही तिनके त्रिबिधे बिवेक । बरणत कबि मति राम यह रस शृंगार को सेक ॥ ६६ ॥ सुरत गुप्ता लक्षणम् । दोहा ॥ सुरत छिपावे जोतिया सो गुप्ताउर आनि । बरणत कबि मतिराम है चतुराई की खानि ॥ ६७ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ लेन गई हती बाग ही फूल अँध्यारी लखे डर बाढ़यो तहाँई । रोम उठ्यो तन कम्प

छुट्यो मतिरामभई श्रमकी सरसाई। बेलिन में उरझी अँगिया छतिया अति कंटक के क्षत छाई। देह में नेकु सँभाररह्यो नहिंह्यां लगिभाजि मरू करि आई ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ भलो नहीं यह केवरो सजनी गेह अराम। बसन फटे कंटक लगे निशिदिन आठौ याम ६९॥ अथ बिदग्धा भेद। दोहा॥ द्विविधाबिदग्धा कहत हैं कबि करि बिमल बिवेक। बचन बिदग्धा एकहैक्रियाबिदग्धाएक७०॥अथदुहुनकेभेदलक्षण।दोहा॥ करै बचनसों चातुरी बचन बिदग्धामानि। करै क्रियासों चातुरी क्रिया बिदग्धाजानि ७१ ॥ अथबचन बिदग्धा को उदाहरण ॥ कबित्त ॥ आई हैं निपट सांझ गैया गई बन मांझ ह्यांते दौरि आई मेरो कह्यो कान्ह कीजिये। मै तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत बनकी अँध्यारीसों अधिक भय भीजिये। कबि मतिराम मन मोहनसों पुनि २ राधिका कहत बात सांचीयै पतीजिये। कबकी हौं हेरति न हेरे हरि पावतिहौं बछरा हिरानो सो हिराय नेक दीजिये ७२ ॥ दोहा ॥ खेत निहारि धानका यों बूझत मुसकाय। इहौ

हमारो है कह्यो सघन उबर दरसाय ७३॥ अथ क्रिया विदग्धा उदाहरण। सवैया॥ बैठीतिया गुरुलोगनि में रतिसों अति सुन्दर रूप बिशेखी। आयो तहां मतिराम सुजान मनो भवते अति कंत उरेखी। लोचन रूप पियोई चहै अरु लाजनि जाति नहीं छबिपेखी। नैन नवाइ रही हिये माल में लाल की मूरति लाल में देखी॥ ७४॥ दोहा॥ चढ़ी अटारी बाम वह कियो प्रणाम निखोट। तरनि किरन ते दृगन को कर सरोज करि ओट ७५॥ अथ लक्षिता लक्षण। दोहा॥ होत लखाई सखिन को जाको पिय सों प्रेम। ताहि लक्षिता कहतहैं कबि कोबिद करि नेम ७६॥ उदाहरण। कबित्त॥ आई हौं पायँ दिवाय महावर कुंजनते करिकै सुख सेनी। सांवरो आजु सवाँरोहै अंजन नैननि को लखि लाज तरैनी। बातके बूझत ही मतिराम कहा करिये वह भौंह तनैनी। मूँदि न राखत प्रीति अली यह गूँदी गोपाल के हाथ की बेनी ७७॥ दोहा॥ सत रोही भौ हम नहीं दुरेदुराये नेह होत नाम नँद लाल के दीपमालसी देह ७८ अथ कुलटालक्षणम्॥ दोहा

जो चाहति बहुनायकनि सरसुरति परप्रीति।
तासों कुलटाकहतहैंलखिग्रन्थनकीरीति७९
उदाहरण। सवैया॥ अंजनदै निकसी मति नयननि मंजन कै अतिअंग सँवारै। रूप गुमान भरी मगमें पगही के अँगूठा अनोट सुधारै। यौवन के मदसों मतिराम भई मतवारिनि लोग निहारै। जात चली यहि भांति गली बिथुरी अलकैं अचरा न सँभारै॥ ८०॥
दोहा॥ मोहि मधुर मुसकानि सों सबै गांव के छैल। सकल शैलबन कुंजमें तरुणि सुरति कीसैल ८१॥ अथ नष्टसंकेत अनुसयनालक्षण। दोहा॥
केलि करै जहं कंतसो सोथल मढ्यो निहारि। कहि अनुसयना तासु सोंशोच करै बरनारि ८२॥ उदाहरण। कवित्त॥ आई ऋतु पावस अकास आठौ दिशनिमें सोहत स्वरूप जलधरनकी भीरं को। मतिराम सुकवि कद-म्बनकी बासयुत सरसबढ़ावे रस परमसमीरको। भौनसें निकसि वृषभानकी कुमारि देख्यो तासुमें सहेठको निकुंजगिरो तीरको। नागरिके नयननिमें नीरको प्रवाह बढ्यो देखतप्रबाहबढयो यमुनाके नीरको८३॥दोहा॥

ग्रीषम ऋतुमें देखिके बनमेंलगी दवाँरि।
एकअपरबश बातयह मनमें जरति गवाँरि ८४ ॥ अथ भावि स्थान संदह अनुसयनाका लक्षण । दोहा ॥ होन हार संकेतको शोचकरै जोनारि । एहौअनुसयना कही होइ हिये दुखभारि ८५ ॥ उदाहरण कवित्त ॥ बेलिनसों लपटायरहीहै तमालनकी अवली अतिकारी। कोकिलकूक कपोतनके कुलकेलि करैअति आनँदबारी। शोचकरै जनिहोहु सुखी मतिराम प्रवीण सबै नरनारी। मंजुल बंजुल कुंजनके घनपुंज सखी ससुरारि तिहारी ८६ ॥ दोहा ॥ केलिकरैं मधुमत्त जहँ घन मधुपनके पुञ्ज। शोच न करतु असासुरे सखीसघन बनकुञ्ज ८७ ॥ अथ तृतीय स्थानाधिष्ठितस्थके रमणगमनानुसयनालक्षण । दोहा ॥ प्रीतमगये सहेठको जाने हेतुहि पाइ। एहौ अनुसयना कहीहों न गई पछिताइ ८८ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ सांझके समयमें मतिराम कर्म्मबशबँधी बँधी बंशीबट तटमें कुजाई जाय बांसुरी। सुमिरि सहेठ वृषभानकी कुमारि।उर दुख अधिकानो भयो सुखको बिनासुरी। सरसों समीर लाग्यो झुलसी सहेली सबबिषसों

बिनोद लाग्यो बनसों निवासुरी । ताप चढ़ि आईतन पीरचढ़िआई मुख आंखिनकेऊपर उमगि आई आंसुरी ८९ ॥ दोहा ॥ छरीसपल्लव लालकर लखित मालकी हाल । कुंभिलांनी उरमालधरि फूलमाल ज्योंबाल९०॥ अथ मुदितालक्षण । दोहा ॥ चितही सुनि जोबात को मुदित होय जोबाल । मुदिता ताको कहतहैं कबि मतिराम रसाल ९१ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ मोहनसो कुछ्योमनिते मतिराम बढ्यो अनुराग सुहायो । बैठीहुती तियमायकमे ससुरारिक काहू सँदेश सुनायो । नाहके ब्याहकी चारसुनी हियमाहिं उछाह छबीली के छायो ॥ पौढ़िरही पट ओढ़िअटा दुखको मिसुके सुखबाल छिपायो ९२ ॥ दोहा ॥ बिछुरत रोवत दुहुनके सखि यह रूप लखैन । दुख असुवां पिय नअनहैं सुख अंसुवा तिय नयन ९३ ॥ इति परकीया । अथगणिकालक्षण । दोहा ॥ धन दे जाके संगमें रमय पुरुषसैन कोइ । ग्रन्थन को मत देखिकैगणिका जानौ सोइ९४॥उदाहरण कबित्त ॥ लालकर चरण रदन छद नखलाल मोतिनकी रदन रहीहै छबि छाइकै । कबि

मतिराम सुख सुबरन रूपरही रूपखानि मुसकानि सोभा सरसाइकै । आननको इन्दु जानि आंखें अरबिन्द मांनि इन्दिरा रजनि दिनरहति सुहाइकै । नायक नवल क्यों न देइ तन धन ऐसो सुतनको सुतन अनत धनपाइकै ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ लसत गूजरी ऊजरी बिलसत लालबिजार । हिये हजारनके हरै बैठी बाल बजार ९६ ॥ अथअन्यनायकाभेदलक्षण ॥ दोहा ॥ अन्य सुरति दुखिता कही प्रेम गर्विता जानि । रूप गर्विता और पुनि मानवती उरआनि ९७ ॥ अथअन्यसंभोगदुःखिता लक्षणम् । दोहा ॥ निजपति रतिके चिह्न ज्यों लखै और तियदेह । अन्य सुरत दुखिता कहैं करैं पेचसों नेह ९८ ॥ उदाहरण । कवित्त ॥ याहीको पठाइ बड़ो कामकरि आई बड़ी तेरीहै बड़ाई लखैं लोचन लजीलेसों । सांची क्यों न कहैं कछु मोको किधौं आपही को पाइ बकशीशलाई बैसन छबीलेसों । मतिराम सुकबि सँदेशो उनमानियतु तेरे नख शिख अंग हरष कटीलेसों । तूतो है रसीली रसबातन बनायजानै मेरेजानआई रसराखि

कै रसीलेसों ९९ ॥ दोहा ॥ कहत निहारो रूप यहसखी पैढ़को खेद। ऊंचो लेति उसासहो कलित सकल तन स्वेद १०० ॥ अथ प्रेमगर्बिता लक्षणम् । दोहा ॥ निज नायक के प्रेमसों गर्व जनावैं बाल। प्रेम गर्विता कहत हैं सोतौ सुमति रसाल १ ॥ उदाहरण । कबित्त ॥ मेरे हँसे हँसत हैं मेरे बोले बोलतहैं मोहिं को जानत तनमन धन प्राणरी। कबि मतिराम भौहैं टेढ़ी किये हांसीहू मैं छोड़िदेत भूषण बसन पानी पानरी। मोते प्राणप्यारी के न और कोऊ कहा तो सों रिसकरि कीजै कहि कहां को सयानुरी। मै न कामनी के मैं न काहू के न रूप रीझैमन काहूके सिखाये आनौं सैन मानुरी २ ॥ दोहा ॥ औरनके पाँयन दयो नायनि जावकलाल। प्राणपियारी रावरी परखतितुम्हैं रसाल ३ ॥ अथ रूपगर्वितालक्षणम् ॥ दोहा॥जाकेअपनेरूपको अतिहीहोयगुमान रूपगर्विताकहतहैं तासों परमसुजान ४ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ सोयरही रति अन्तरसीली अनन्द बढ़ाय अनंग तरंगनि। केशरि खौरि करी तियके तन प्रीतम और सुवास

के संगनि। जागि परी मतिराम सरूप गुमान जनावति भौंहके भंगनि। लालसों बोलति नाहिंन बाल सुपोंछति आंखि अँगोछति अंगनि ५ ॥ दोहा ॥ कैसे आऊंहों उहां हैं जहँ नन्दकिशोर। दिनहू में मुखचन्द को लखि ललचाति चकोर ६ ॥ अथमानवतीलक्षण। दोहा ॥ करै ईर्षा ते जुतिय मनभावनसों मान। मानवती तासों कहत कबि मतिराम सुजान ७ ॥ उदाहरण। कबित्त ॥ सोमन मोहन होत लई मुखजाके भई बिधि की छबि छाजै। खोलि के नयननि देखै जो नेक तो श्याम सरोज पराजय साजै। जो बिहँसे मुख सुन्दरतो मतिराम बिहान को बारिजलाजै। बोलै अली मृदु मंजुल बोलतो कोकिल बोलनि को मदभाजै ८ ॥ दोहा ॥ सुनियत दै मनमानिनी बिन अपराध रिसानि। नेह जरावनको महादीप ज्योति जियजानि ९॥ अथ दशनायकावर्णन। दोहा ॥ प्रोषित पतिकाखंडिता कलहन्तरिताजानि। बिप्रलब्ध उत्कंठिता बासक सज्जामानि १० ॥ दोहा ॥ स्वाधिन पतिका कहतहैं अभिसारिका सुनाम। कहो

प्रवत्स्यत प्रेयसी आगत पतिका बाम ११ ॥ दोहा ॥ दशौं अवस्था भेदसों दशौं नायका जानि । तिनके लक्षण लक्ष यह नीके कहौं बखानि १२ ॥ अथ प्रोषितपतिकालक्षण । दोहा ॥ जाके पीउ विदेश में बिरह बिकल तिय होय । प्रोषित पतिका नायका ताहि कहत सब कोय १३ ॥ अथ मुग्धा प्रोषितपतिका उदाहरण । कबित्त ॥ बारकितेक सहेलिनके कहे कैसँहु लेतनबीरी सँवारी । राखति रोंकि कहैं मतिरामचले अँसुवा अँखियानते भारी । प्राण पियारो चल्यो जबते तबते कछु औरही रीति निहारी । पीर जनावति अंगनि में कहि पीर जनावति काहे न प्यारी १४ ॥ दोहा ॥ पिय बियोग तिय दृग जलधि जलतरंग अधिकाय । बरुनि मूल बेला परसि बहुरयो जात बिलाय ॥ अथ मध्या प्रोषित पतिका उदाहरण । कबित्त ॥ चन्द को उद्योत होत नैन चन्द कान्त कन्त छायो परदेश देह दाहनि दहतु है । उसीरगुलाब नीर करपूर परसत बिरहा अनल ज्वाल जाल निज गतुहै । लाजनित कछु न जनावे काहू सखिनसों उरकोउदारि

अनुरागे उमँगतुहै । कहाकहौं मेरीबीर उठिहै अधिकपीर सुरभि समीरसीरो तीर सों लगतुहै १५॥ दोहा ॥ बहुत दूबरीहोतक्यों योंबूझी जब सासु । उत्तर कढ़्यो न बालमुख ऊँची लई उसासु १६ ॥ अथप्रौढ़ाप्रोषितपतिकाउदाहरण ॥ कवित्त ॥ बिरह तिहारे लाल बिकल भई है बालनींद भूखप्यास सिगरी बिसारियतु हैं । चोरीकीसी बात चन्द्रमाहूंते छिपाईतू बसन नितानीके बयारि बारियतुहैं । कहै मतिराम कलाधर कीसी कलाछिन जीवन बिहीन मीनसी निहारियतुहैं । बार बार सुकुमार फूलनकी माल ऐसीमारके मरोरनि मरोरि मारियतुहैं १७ ॥ दोहा ॥ चन्द्रकिरणि लगि बालतनु उठै आगियों जागि । दुपहर दिन कर परसि ज्यों कर दरपनमें आगि ॥ १८ ॥ अथपरकीयाप्रोषितपतिकाउदाहरण । सवैया ॥ कुंजमिलि मोहनसों मतिराम सुकेलि करी अति आनँद भारी । तेई लताद्रुम देखत दुःख चलेअसुवां अँखियानते भारी । आवतिहो यमुनातट कोनहिं जानिपरे बिछुरे गिरधारी । जानति हौं सखि आवनचाहत कुंजनते कहिं कुंज-

बिहारी १९ ॥ दोहा ॥ लाज छुटी गेहौ छुट्यो मुखसों छुट्यो सनेह । सखिकहियो वा निठुर सों रहीछुटिबे देह २० ॥ अथगणिकाप्रोषितपतिकाकोउदा-हरण । सवैया ॥ आली श्रृंगारतिहै हठसों परलागत अंग अंगार शृंगारो । पीरीपरी तनमें मतिराम चले अँखियानते नीरपनारो । सोउ नहीं मनभावन नायक आवतजो बहुते धनवारो । बीर बिलासिनि को बिसरै न विदेश गयो पिय प्राणपियारो २१ ॥ दोहा ॥ धनके हेतु बिलासिनी रहै सँभारेकेश । जोत्तियके हियमें बसै सोपिय बसै बिदेश २२ ॥ अथखंडि-तालक्षण । दोहा ॥ पियतन औरहि नारिके रतिके चिह्न निहारि । दुःखितहोय सोखंडिता बरणत सुकबि सुधारि २३ ॥ अथमुग्धाखण्डिताकोउदाहरण सवैया ॥ लालतुम्हैं कहुं औरतियाकी लख्यो अँगियामें लगभवत चोवै । ताछबिते मतिराम न खेलति बूझै सखीनहूं सोंदुखगोवै । लिखै करकेनखसों धगके नखशोश नवाय के नीचेहीजोवै । बालन बेलिन रूसनोजानति भीतर भौनसो सूनहीरोवै २४ ॥ दोहा ॥ बाल सखिनकी सीखते मान न जानतिठानि

पियबिन आगम भौनमें बैठी भौंहैं तानि २५ अथमध्याखंण्डिताको उदाहरण । कवित्त ॥ जावक लिलार ओठ अंगनकी लीकसोहै पैयन अलीक लोकलीकन बिसारिये । कबि मतिरामछाती नखक्षत जगमगे डगमगे पग सूधेमगमें न धारिये । कसकै उघारतहौं पलकपलकयाते पलकमें पौढ़िश्रम रातिको निवारिये । लट पटे पेचशिर बात न कहत बनै लटपटेपेच शिरपागके सुधारिये २६ ॥ दोहा ॥ कोउकोरे कितेकहू तजो न टेक गोपाल । निशिऔरन के पगपरो दिन औरनिके लाल ॥ २७ ॥ अथ प्रौढ़ाखण्डिताकोउदाहरण । सवैया॥ प्रीतम आयेप्रभात प्रिया मुसक्यान उठी दृगसों दृगजोरै । आगे ह्वै आदरकै मतिराम कहै मृदुबैन सुधारस बोरै । ऐसे सयान सुभाइनहींसों मिलीमुन भावनसों मनभोरै । मानगो जान तबै छतिया अँगियाकी तनीन छुटी जबछोरै ॥ २८ ॥ दोहा ॥ आदरदै पियसों मिली तियहिय राखि सयान । दृगगहि बांधीकंचुकी सम-झायो मनमान २९ ॥ अथ प्रकीयाखण्डिताकोउदाहरण । सवैया ॥ रावरे नेह कोलाजतजी अरु गेहके

काज सबै बिसरायो। डारदयो गुरु लोगन को डरगांव चवाई में नाम धरायो ॥ हेतु कियो हमजेतो कहा तुमतो मतिराम सबै बिसरायो। कोऊ कितेक उपाय करो कहुँ होत है आपन पीवपरायो ३० ॥ दोहा ॥ हमसों तुमसों लालइत नयननही को नेह। उत प्यारी के द्दगन के सलिलसींचियत देह ३१ ॥ अथगणिका खण्डिता को उदाहरण । सवैया ॥ ह्यां हमसों मिलिबो ठहराय कै नैन कहूं अनतेही करीजे। भोरही आय बनाय कै बातन चातुरह्वै बिनती बहुकीजै ॥ ऐसियेरी तिसदा मतिरामसों कैसे पियारेजू प्रेमपतीजै। सौंहन खाइये जाइये ह्यांते न मानिहौं तौहूं जो लाखन दीजे ३२ ॥ दोहा ॥ कन्त कहासौंहन करो जानिपस्यो अबनेह। देन कह्यो सो बिसरदियो जान न पैहो गेह ३३ ॥ अथ कलहंतरिताकोलक्षण । दोहा ॥ कह्यो न मानै कन्त को पुनि पाछे पछिताइ। कलहन्तरिता नायका ताहि कहत कबिराइ ३४ ॥ अथ मुग्धा कलहन्तरिता को उदाहरण । सवैया ॥ गौने कि चूनरी ऐसि अहै दुलही अबहींते ढिठाई बगारी।

आउ बनावन आये हैं आपने हाथसों जानत पाग सँवारी ॥ पांयपरे मतिराम लला मनुहारि करी करजोरि हहारी । आपही मान्यो मनायो न काहू को आपहीखात न पान पियारी ३५ ॥ दोहा ॥ आई गौने काल्हिहीं सीखे कहा सयान । अबहीं ते रूसन लगी अबहीं ते पछितान ३६ ॥ अथ मध्याकलहन्तरिताको उदाहरण । सवैया ॥ पांयन आय परे तो परे रहे केती करी मनुहारि सहेली । काह कहों सखिबानि जमान गुमान में सीखी न पीय पहेली ॥ मान्यो मनायो न में मतिराम गुमान में ऐसी भई अलबेली । आजु तो ल्याउ मनाइ कन्हाई को मेरो न लीजिये नाम सहेली ३७ ॥ दोहा ॥ जो तू कहै तो राधिका पियहि मनावन जाऊँ । उहां कहौंगी जायकै सखी तिहारो नाउँ ॥ ३८ ॥ अथ प्रौढ़ा कलहन्तरिताको उदाहरण । सवैया ॥ ठाढ़े भये करजोरिकै आगे अधीन ह्वै पांयन शीश नवायो । केती करी बिनती मतिराम पै मैं न कियो हठते मन भायो ॥ देखतही सिगरी सजनी तुम मेरे तो मान महामद

छायो । रूठिगयो.उठि प्राणपियारो कहा कहिये तुमहूं न मनायो ३९ ॥ दोहा ॥ प्रीतम जब पांयन पर्‌यो तब अति भईसरोष । कह्यो न मान्यहुँ आपही हमैं दीजियतु दोष ४० ॥ अथ परकीयाकलहन्तरिताको उदाहरण । सवैया ॥ जाके लिये गृहकाज तज्यो न सिखी सखियानकी सीख सिखाई । बैर कियो सिगरे ब्रजगांव में जाके लिये कुलकानि गँवाई ॥ जाके लिये घर बाहरहू मतिराम रह्यो हँसिलोग चवाई । ताहरिसों हितएककहिबार गँवारिमैं तोरतबारनलाई ४१ दोहा ॥ जोरतहू सजनी विपति तोरततपत समाज । नेहकियोबिन काजही तेहकियो बिनकाज ४२ ॥ अथ गणिका कलहंतरिताको उदाहरण । सवैया ॥ जाते लही जगबीच बड़ाई जोमेरो बियोग जोहोत है क्षीनो । मोहिं गनेमतिरामजोप्राणके मेरेमठाहिर ह्यो जोअधीनो ॥ मेरेलिये नितहीउठिकैगहिनोजु गढ़ायकैल्यावैनवीनो । प्राणपिया-रो सो पांयन लाग्योरी मैं हँसि कंठलगाय न लीनो ४३ ॥ दोहा ॥ यासों कियो सनेह मन रहै न एकौ साध । तासों भई सरोष

हौं सजनी बिन अपराध ४४ ॥ अथ बिप्रलब्धाको लक्षण । दोहा ॥ आप जाय संकेत में मिलै न जाको पीय । ताहि बिप्रलब्धा कहत शोच करत अति जीय ४५ ॥ अथ मुग्धाबिप्रलब्धाकोउदाहरण सवैया ॥ आलिन के सुख मानिबे को पिय प्यारे कि प्रीति गई चलिबागै । छाय रह्यो हियरो दुखसों जब देख्यो नहूं नँदलाल सभागै ॥ काहूसों बोल कछू न कहै मतिराम न चित्त कहूं अनुरागै । खेल सहेलिन में परखेल नवेलीको खेलन जेल सो लागै ४६ दोहा ॥ लख्यो न कन्त सहेट में लख्यो नखत को राय । नवल बालको कमलसों गयो बदन कुँभिलाय ४७ ॥ अथ मध्याबिप्रलब्धाको उदाहरण सवैया ॥ केलिके मन्दिर देख्यो न लालको बालके दाहन अंग दहे हैं । भौंह चढ़ाय मखी मो लख्यो मतिराम कछून कुबोलकहे हैं ॥ भूलि हुलास बिलास गये दुखते भरिकै अँसुवा उमहे हैं । ईछन छोरनि तेन गिरे मनो तीछन कोर निछेदि रहे हैं ४८ ॥ दोहा ॥ तियको मिल्यो न प्राणपति सजल जलद तनमैन । सजल जलद लखिकै भये

सजल जलदसे नैन ४९ ॥ अथ प्रौढ़ाविप्रलब्धाको उदाहरण । कवित्त ॥ सकल सिंगार साजि संगलै सहेलिनको सुन्दरि मिलन चली आनँद के कन्दको । कवि मतिराम बाल करति मनोरथनि पेख्यो परयंकमैंन प्यारे नँदनन्दको॥ नेहते लगीहै देह दारुण गहनगेह बानके बिलोक द्रुम बेलिनके बृन्दको । नन्दकोहँसत आयो मुखचन्द अबचन्द लाग्यो हँसहँसनि तियाके मुखचन्दको ५० ॥ दोहा ॥ लख्यो न मंदिर केलिके पिय रुचिविजित अनंग । नयन करनते जलबलय गिरे एकही संग ॥ ५१ ॥ अथ परकीया विप्रलब्धाको उदाहरण । कवित्त ॥ चलो मतिराम प्राणप्यारेको मिलनघात नेसुक निहारिके बिगारि काजघरको । पियरे बदन दुखहियरे समाइ रह्यो कुंजनमें भयो न मिलाप गिरिधरको ॥ बिसरे बिलास सबिलाइ गयो हाँसछायो सुन्दरिके तनमें प्रताप पञ्चशरको । तीक्षन जुन्हाई अरु ग्रीषमकी घामभई भीषन पियूष भानु भानु दुखहरको ५२ ॥ दोहा ॥ तजी जोन्हिसों भूमिअति झरे कुंजके फूल । तुमबिन वाको बनभयो खड्ग

पत्रकेतूल ५३ ॥ दोहा ॥ साहस करि कुंजनगई लख्योननन्दकिशोर। दीपशिखासी थरहरी लगे बयार झकोर ५४ ॥ अथ गणिका बिप्रलब्धा कोउदाहरणं । सवैया ॥ बीर बिलासनि कोटि हुलास बढ़ाइकै अंग शिंगार बनायो। प्रीतम गेह गई चलिकै मतिराम तहां न मिल्यो मन भायो ॥ संगसहेली सोंरोषकियो नहिंआपुन को यह दोषलगायो। हायकियो मैं मतो यह कौनजो आपने भौन न बोलि पठायो ५५॥ दोहा ॥ मोंहिं पठायो कुञ्जमें उत आयो नहिं आप । आली औरहु मीतको मेरो मिट्यो मिलाप ५६ ॥ अथ उत्काकालक्षण । दोहा ॥ आपु जाय संकेतमें पीउ नआयो होय। ताको मन चिंताकरै उत्काकहिये सोय५७॥ अथ मुग्धाउत्काको उदाहरण । सवैया॥बीतिगई युगयामनिशा मतिराम मिटी तमकी सरसाई। जानति हों कहुँ और तियासों रह्योरस में रसिकै रसकाई ॥ शोचति सेजपरी यों नवेली सहेली सों जाति न बातसुनाई। चन्दचढ्यो उदयाचलमें मुखचन्दमें आनि चढी पियराई ५८॥ दोहा कितन कन्त आयो अली लाज न बूझि

सकैंन। नवल बालपलका परी पलक नलागे नैन५९॥ अथ मध्याउत्काका उदाहरण। सवैया॥ बारहिंबार बिलोकति द्वारहिं चौंकिपरै तिनके खरकेहूं। सेजपरी मतिराम बिसूरति आइ अहौंअब-हीं लखिमैहूं॥ संगसखीनके खेलतहीअजहूँ रजनी पतिके अथयेहूँ। लालन बेगि न जाहु घरै फिरबाल न मानिहैं पांय परेहूँ ६०॥ दोहा॥ कहां रह्यो आयो सखी पीउ पहरयुग मैन। अधनिकरे अधरानिसों बालबदन ते बैन ६१॥ अथउत्काप्रौढाकोउदाहरण। सवैया॥ कैयुघरी निशिबीति गई अरुमेह चहूँदिशि आयो उनैहै। अंग शिंगारकै बैठीहै सांवरे तेरीये बाट बिलोकत ह्वैहै॥ बैठे कहा मतिराम रसालहो राति मनावतिही पुनिजैहै। जाहु न वेगि निहारी पियारीसों दोषबिचारि हमैं बहुदैहै ६२॥ दोहा॥ पीउ न आयो ध्यानमें मूंदेलोचन बाल। पलक उघारी पलकमें आयोहोय न लाल ६३॥ अथ परकीयाउत्काकोउदा-हरण। कबित्त॥ यमुनाके तीर बहशीतल समीर जहां मधुकर मधुर करत मन्दशोरहैं। कबिमतिराम तहां छबिसों छबीलीबैठी अंग-

निते फैलिरी सुगन्धकी झकोरहैं ॥ प्रीतम बिहारी के निहारिबेको बाट ऐसी चहूँओर दीरघ दृगानकरी दौरहैं । एक ओर मीन मनो एकओर कंज पुंजएक ओर खंजन चकोरएक ओरहैं ६४ ॥ दोहा ॥ कंतबाट लखिगेहकीकुंजदेहरीआय।यैहैंपीउबिचारि योंनागरि फिरि फिरिजाय ६५ ॥ अथ गणिकाउत्का कोउदाहरण । सवैया ॥ प्रीतमको धरध्यान घरीक करैं मनहींमन काम कलोलैं । प्रीतम के खरके मतिराम अचानकही अँखिया पुनि खोलैं ॥ प्रीतम ऐहैं अजौं सजनी अँगिराइ जम्हाइ घरीकु यौंबोलैं । गावैं घरी कुगरे-हीहरेहरिगेहके बाग हरेहरे डोलैं ६६ ॥ दोहा ॥ बारबधू पिय पन्थलखि अँगिरानी अँग मोरि । पौढि रही परयंकमनु डारी मदन मरोरि ६७ ॥ अथ बासकशय्याकालक्षण । दोहा ॥ ऐहैं प्रीतम आजुयों निश्चय जान्यो बाम । साजेसेज शिंगार सखि-बासकशय्या नाम ६८ ॥ अथ मुग्धाबासकशय्याकोउदाहरण । कबित्त ॥ भईहौं सयानी तरुनाई सरसानी अरु प्रीतिमें पत्यानीउठि लाजडरनाकियो । कबि मति

राम कामकेलिकी कलानिकरि मोहनलला को बशकीजो अभिलाषयो ॥ मृदुमुसक्याइ परयंक में निशंकजाइ अंकभरि आनँद अधर रस चाखियो । नेवरीकि तनक झनंक राखि प्यारी आजु रसबकी तनक झनक रस राखियो ६९ ॥ दोहा ॥ दीठि बचाई सखिन की केलि भवन में जाइ । पौढ़िरह्यो क्षण सेजतिय अति आनँद अधिकाइ ७० अथ मध्याबासकशय्याकोउदाहरण । कबित्त ॥ केसरि कनक जहां चम्पक बरण कहां दामिनियों दुरि जात देहकी दमकते । कबिमतिराम लोने लोचन लपट लाज अरुण कपोल कामतेज की तमक ते ॥ पग के परत कल किंकिणि नेवर बजें बिछिया झमक उठें एकही झमते । नाहसुख चाहि चित्त औचक हँसति चौंकि परी चन्दमुखी निज चौकाकी चमक ते ७१ ॥ दोहा ॥ निशि तिय राति निहारियत सौति बदन अरबिंदु । सखी एक यह देखिये तेरो आननइंदु ७२ ॥ अथ प्रौढ़ाबाशकशय्याको उदाहरण । सवैया ॥ बारन धूप अँगारन धूप के धूप अँध्यारी पसारी महा है । आनन चन्द

समान उग्यो मृदुमन्द हँसी जनु जोन्ह छटा है ॥ फैलिरही मतिराम जहाँ तहँ दीपति दीपन की परभा है। लालतिहारे मिलाप कों बालसुआजु करी दिनही में निशा है ७३ ॥ दोहा ॥ सब शिंगार सुन्दरि सजे बैठि सेज बिछाय। भयो द्रौपदी को बसन बासर नहीं बिलाय ७४ ॥ अथ परकीयाबासकशय्या को उदाहरण। सवैया साँझहिंते करि राखै सबै करिबे को जुकाजहुते रजनी के। पौढ़िरही उमगै अतिही मतिराम अनन्द अमात नहीके ॥ सोवत जानिकै लोग सबै अधिकाने मिलाप मनोरथ पीके। सेजते बालउठी हरषै पट खोलि दिये तबहीं खिरकी के ७५ ॥ दोहा ॥ मनमोहन के मिलनको करै मनोरथनारि। धरै पवन के सामने दिया भवनको बारि ७६ ॥ अथ गणिकाबासकशय्या को उदाहरण। कबित्त ॥ सेत सारी सोहत उज्यारी मुँखचन्द कीसी महलनि मन्द मुसक्यान की महामही। अँगिया के ऊपर है उलही उरोज ओपउर मतिराम माल मालती डहाडही ॥ माँजे मंजु मुकुर से मंजुल कपोल गोल गोरीको

गोराई गोरे गातन गहागही । फूलनकी सेज बैठी दीपकफैलायलायबेलीकी फुलेल फूली फूलसी लहालही ७७ ॥ दोहा ॥ सुन्दरि सेज सँवारि कै साजे सबै शिंगार । हगकमलन के द्वारमें बांधे बन्दनवार ७८ ॥ अथ स्वाधीनपतिक को उदाहरण । दोहा ॥ सदारूप गुण रीझि पिय जाके रहै अधीन । स्वाधिनपतिका नायका बरणै कवि परबीन ७९ ॥ अथ मुग्धास्वाधीनपतिका के उदाहरण । सबैया ॥ आपने हाथसों देत महावर आपहि बार शिंगारतनीके । आपनहीं पहिरावत आनिकै हार सँवारि कै मौलसरीके ॥ हौं सखि लाजन जात मरी मतिराम स्वभाव कहा कहौं पीके । लोग मिलै घर घेर करैं अवहीं ते ये चेरे भये दुलही के ८० ॥ दोहा ॥ अंग अंग अवलोकि कै तिय यौवन की ज्योति । सुधा सिन्धु अवगाह युत दीठि नाहकी होति ८१ ॥ अथ मध्यास्वधीनपतिका उदाहरण । कबित्त ॥ जगमग यौवन अनूप रूप चाहियत देखियति रति ऐसी रम्भासी बिसाइये । देखिकै प्राण प्यारे प्राण प्यारी पासखरो घूंघुट उघारि नेकु बदन दिखाइये । तेरे

अंग अंग में मिठाई लेउ नाहीं भरि मति-
राम कहै ये प्रगटही न पाइये । नायक के
नैनन में नाइये सौधार सब सौतिन के
लोचन न लोनसो लगाइये ८२ ॥ दोहा ॥ बड़े
आपने दृगनको यम कहि सको सुमैन ।
पिय नयनन भीतर सदा बसत तिहारे नैन
८३ ॥ अथ प्रौढ़ास्वाधीनपतिकाको उदाहरण । सवैया ॥ लालन
में रति नायकते सुख सुन्दरता रुचि पुंज-
नि पेखी । बालनतौ मतिराम कहैं रतिते
अति रूप कला अवरेखी ॥ सामुह बैठे लखैं
इक सेज में बोली अली इक रूप बिशेखी ।
भाल में तेरे लिखी बिधिसो यह लालकी
मूरति लाल में देखी ८४ ॥ दोहा ॥ सुधामधुर
तेरो अधर सुन्दर सुमन सुगंध । पीव जीव
को बन्धु है बन्धु जीव को बंध ८५ ॥ अथ
परकीया स्वाधीन पतिकाको उदाहरण । सवैया ॥ मो युग नैन
चकोरन को यह रावरे रूप सुधाही को नैबो ।
कीजै कहा कुल कानिते आनि पस्यो अब
आपनो प्रेम छिपैबो । कुंजनमें मतिराम कहूँ
निशिद्योसहूं घातपरे मिलि जैबो । लाल
सयानी अलीन के बीच निवारियेह्वां की

गलीन की ऐबो ८६ ॥ दोहा ॥ बिषम लोग ब्रज गांव को लाल बिलोको बास। बढ़ि जैहै इन दृगन के हांसनिते उपहास ८७ ॥ अथग-णिकास्वाधीन पतिकाउदाहरण । सवैया ॥ भूषणअम्बरल्यावत आपु रहै पहरावन को मुख हेरे। आपहि पानखवावति आनि सहेलिन आवन पावत नेरे। तापियसों रिस कैसेकरों मतिराम कहै सिखये सखि तेरो। पूर रहै मन भावन के गुणमान को ठौर नहीं मनमेरे ८८ ॥ दोहा ॥ मोहिं लखे सजनी सदा जाको धन मम प्रान। सपनेहूं तो पीवसों मान न भलो सयान ८९ ॥ अथ अभिसारिका को लक्षण । दोहा ॥ पियहि बुलावै आपको पियपै आपहि जाय। ताहि कहत अभिसारिका जे प्रबीण कबि राय ९० ॥ अथमुग्धा अभिसारिका को उदाहरण । सवैया ॥ बातन जाय लगाय लई रसही रसमें मन हाथ कै लीनो। लाल बिहारे बुलावन को मतिराममें बाल कह्यो परबीनो। बेगि चलो न बिलम्ब करो लख्यो बालनवेली को नेह न बीनो। लाजभरी अँखियां बिहँसी बसि बोल कहौ बिन उत्तर दीनो ९१ ॥ दोहा ॥ अली

चली नवला हिले पियपै साज शिंगार। ज्यों मतंग अँडदारको लिये जात गँडदार९२॥ अथ मध्या अभिसारिका को उदाहरण। सवैया॥ बैठि रहे मतिराम लला घर भीतर सांझहि ते अनुरागी। बानकसौं बनि चारु शिंगारनि आई सुहागिनि प्रेमसौं पागी। प्यारे कह्यो हँसि आइये सेजहि प्यारी की जानि बिलासिनि जागी। नयन नवाइ रही मुसक्याय के हार हिये को सँवारन लागी ९३॥ दोहा॥ यौबन मद गज मन्द गति चली बाल पियगेह। पगनि लाज आँई परीं चह्यो महा मद नेह ९४॥ अथ प्रौढ़ा अभिसारिका को उदाहरण। कवित्त॥ सहज सुवास युत देहकी दुगुनि द्युति दामिनी दमकि दीपकसर कनक तें। मतिराम सुकवि सुमुख सुकुमार अंग सोहत शिंगार चारु यौवन बनकतें। सोइबे को सेज चली प्राणपति प्यारे पास जगत जुदार ज्योति हँसनि कनकतें। चढ़त अटारी गुरुलोगन की लाज प्यारी रसना दशन दाबे रस झनकनतें ९५॥ दोहा॥ साजि शिंगार सेजहि चली बाल जहां पतिप्रान। चढ़त अटारी की सिढ़ी भई कोस परमान

९६ ॥ अथ परकीयाकृष्णा अभिसारिकाको उदाहरण । कवित्त ॥
उमड़ि घुमाड़ि दिगमण्डल निमंडिरहे झूमि
झूमि बादर कुहुकि निशिकारी में । अङ्गन
में कीन्हो मृगमद अङ्गरागतैसो आनन
उढ़ाय लीन्हो श्यामरंग सारी में । मति-
राम सुकवि मयंक रुचिराज रही आभरन
राजी मरकत मनवारी में । मोहन छबीले
को मिलन चली रोमाछबि छाहलो छबीलो
छबि छाजत अँध्यारीमें ९७ ॥ दोहा ॥ श्याम
बसन में श्याम निशि दुरगतियाकी देह ।
पहुँचाई चहुँओर घिर भोर भीर पिय गेह
९८ ॥ अथ शुक्लाअभिसारिकाको उदाहरण । कवित्त ॥ अंगन
में चन्दन चढ़ाय घनसार सेतसारी क्षीर
फेन ऐसी आभा उफनाति है । राजतरु
चिर सचि मोतिनके आभरण कुसुम कलि-
त केशशोभा सरसाति है । कबि मतिराम
प्राणप्यारे को मिलन चली करिकै मनोरथ
नि मृदुमुसुकाति है । होतिनै लखाई निशि
चन्दकी उज्यारी मुख चन्दकी उज्यारी
तनछाहों छिपिजातिहै ९९ ॥ दोहा ॥ मलिन
करी छबि जोन्हकी तन.छबिसों बलिजाउँ ।

क्यों जैहौं पियपै सखी लखि जैहै सबगाउँ २०० ॥ अथ दिवा अभिसारिका को उदाहरण। कबित्त ॥ सारी जरतारी की झलक झलकनि तैसो केसरिको अंगराग कीन्हो सब तनमें। तीक्षण तरणि की किरणिते दुगुन ज्योति सोहत जवाहिर जड़ित आभरनमें। कबि मतिराम आभा अंगन अंगारिनकी धूमकैसीधार छबि छाजत कंचनमें। ग्रीषमदुपहरीमें हरिको मिलन चली जानी जात नारिनंद वारि युत बनमें १ ॥ दोहा ॥ ग्रीषम ऋतु की दुपहरी चलीबाल बनकुंज। अंग लपटि तीक्षण लुवै मलय पवन के पुंज २ ॥ अथ गणिका अभिसारिका को उदाहरण। कबित्त ॥ सांझहि शिंगार साजि प्राण प्यारे पास जाति बनिता बनकबनी बेलसी अनंद की। कबि मतिराम कल किङ्किणि की धुनि बाजै मन्द मन्द चाल ज्यों बिराजत गयंद की। केसरि में रंगिये दुकूल हांसी में झरत केशन मैं छाई छबि फूलन के बृन्द की। पीछे पीछे आवत अँध्यारी सी भँवर भीर आगे फैल रही उजियारी मुख चन्दकी ३॥ दोहा ॥ नागरि सकल शृंगार करि चली प्राण

पति पास। प्रिया अली विहँसत मनो शोभा सहज बिलास ४ ॥ अथ प्रवत्स्यतप्रयसीकोलक्षण । दोहा ॥

होनहार पियके बिकल बिरह होय जो बाल। ताहि प्रवत्स्यत प्रेयसी बरणत बुद्धिबिशाल ५

अथ मुग्धाप्रवत्स्यत्प्रेयसीको उदाहरण । कवित्त ॥ जादिनते चलिबेकी चरचा चलाईतुम तादिनते वाके पियराई तन छाईहै। कहै मतिराम छांड़े भूषण बसन पान सखिनसों खेलनि हँसनि बिसराई है। आई ऋतु सुखकी सुहाई प्रीति वाके चितऐसेमें चलोतो लाल रावरी बड़ाई है।सोवत न रैनदिन रोवत रहत बाल बूझत कहति सुधि मायकेकी आई है ६ ॥ दोहा ॥

क्यों सहिये सुकुमार यह पहिलो बिरह गोपाल। जब वाके चितहित भयो चलन लगे तब लाल ७ ॥ अथ मध्याप्रवत्स्यत्प्रेयसीको उदाहरण । सवैया ॥

गौनेके द्योस.छसातक बीते न चौथी कहां अबहीं इतआई। लालनबाल के ताक्षण ते मतिराम परी मुखमें पियराई॥ तू न बहू को पठाय सखी यह देखि दुहून की प्रीति सुहाई। रोयेसे रोचन मोयेसे लोचन सोयन शोचत रैन बिताई॥ ८ ॥ दोहा ॥ अबहीं ले

मिलि मोहिं सखि चलत आज ब्रजराज। अँसुवानि राखति रोंकि कै जियहि निकासति लाज ९ ॥ अथ प्रौढ़ाप्रवत्स्यत्प्रेयसीको उदाहरण । कवित्त ॥ मलय समीर लागे चलन सुगंध सीर पथिकन कीन्हे परदेशनिते आवने। मतिराम सुकवि समूहन कुसुम फूले कोकिल मधुप लागे बोलन सुहावने॥ आयो है बसंत भये पल्लवित जलजात तुम लागे चलिबे की चरचा चलावने। रावरी तियाको तरुवर सरवरन के किशलय कमल ह्वैहैं बारक बिछावने १० ॥ दोहा ॥ कोपनिते किशलय जबै होहिं कलिनते कौल। तब चलाइये चलनकी चरचा नायक तौल ११ ॥ अथ परकीया प्रवत्स्यत्प्रेयसी को उदाहरण । कवित्त ॥ मोहनलला को सुन्यो चलन विदेश भयो बालमोहनीको चित्त निपट उचाटमें। खरीतल बेली तन मनमें छबीली राखै छाति पर छिनकु २ पांव बाटमें। प्रीतम नयन कुबलयन को चन्द भयो घरमें चलैगा मतिराम जेहि घाटमें। नागरी नबेलिरूप आगरी अकेली रीति गागरी लै ठाढ़ीभई घाटहीके बाटमें १२ ॥

दोहा ॥ चलत सुन्यो परदेशको हियरारह्यो न ठौर। लै मलिनी मीतहिं दयो नौरसालका मौर १३ ॥ अथ गणिकाप्रवत्स्यत्प्रेयसीको उदाहरण । कवित्त ॥ मंजन कियो न तन अंजन दियो न नयन जावक दियो न पाँय रही मनमारिकै। मति-राम सुकबित मोलछोड़ि बैठीबौर पहिरे बसन डारे भूषण उतारिकै। आइहैं आजु पीव बिदामांगन बिदेशको यों नेहके जमायबेकी चातुरी बिचारिकै। गारि राख्यो चंदन बगा-रिराख्यो घनसार आंगनमें सेज सरसिजन सवाँरिकै १४ ॥ दोहा ॥ चलत पीय परदेशको बरज सकौं नहिं तोहिं। लै आइहौ आभरन ज्यों जियत पाइहौ मोहि १५ ॥ अथ आगतपतिकाकोलक्षण । दोहा ॥ यातियको परदेशते आयोपिय मतिराम। ताहि कहत कबिलोग यह आ-गंत पतिका बाम १६ ॥ अथ मुग्धाआगतपतिकाको उदा-हरण । सवैया ॥ आयो बिदेशते प्राणपिया मति राम अनंद बढ़ाइ अलेखै। लोगनिसों मिलि आंगन बैठि घरीही घरी सिगरो घरपेखै। भीतर भौनके द्वारखड़ी सुकुमारतिया तन कम्प बिशेखै। घूँघुटको पट ओटकिये

पट ओटदिये पियको मुखदेखै ॥ १७ ॥
दोहा ॥ पिय आयो नवबालतन बाढ्यो हरष बिलास। प्रथम बारि बूंदन उठै ज्योंबसुमती सुबास ॥ १८ ॥ अथ मध्याआगतपतिकाकोउदाहरण । सवैया ॥
चन्द्रमुखी सजनीनके संग हुती पतिअंग निमें मनुफेरत । ताहिसमय पियप्यारेकी आगम प्यारी सखीकह्यो द्वारते टेरत। आय गये मतिराम जबै तब देखत नयन अनंद भयेरत। भौनके भीतर भाजिगई हँसि कै हरुवे हरिको फिरहेरत १९ ॥ दोहा ॥ पिय आगम शरदा गमन बिमल बालमुख इन्दु। अंग बिमल पियपै भयो फूलेदृग अरबिन्द २० ॥ अथ प्रौढ़ाअगतपतिकाको उदाहरण । सवैया ॥ प्राणन प्यारो मिल्यो सपनेमें परी जबते सुखनींद बिहारे। कंतको आयबो त्योंहीं जगाय सखी कह्यो दैनपीउ पैनिचोरे। यों मतिराम भयो हियले सुखबालके बालमसों दृगजोरे। जैसे मिहीपटमें चटकीलचढ़ै रँग तीसरी बारके बोरे २१ ॥ दोहा ॥ पियआयो परदेशते हिय हुलसी अतिबाम। टूक टूक कंचुकि कियो करक मनीने काम २२ ॥ अथ परकीयाआगतपतिका

कोउदाहरण । सवैया ॥ आयो बिलम्ब बिदेशते बालम बालबियोग ब्यथा बिसराई । आईतहां तिनकेसँग ह्वै सब गाँवकी जे युवती जुरि आई । देखतही मतिराम कहैं अँखियानमें आँनदकी छबिछाई । लाजनिक्यों करिवैन कहैं सुकस्यो दुखदेह सबै दुबराई २३ ॥ अथ दूसरोउदाहरण । सवैया ॥ भावतेको सुनिआगम आनँद अंगनि अंगनिमें उमह्यो है । सोहमहूँ हितसों न दुराइये आली कह्योयह कौन कस्योहै । गाढीभई माहारिदरकी अँगियाकी तनी नित तन उमस्योहै । खैंचि लिये सुख के अंसुवा यह क्यों दुरि है हिय राउ मह्यो है २४ ॥ दोहा ॥ सुन्यो माय ते जब वही बामन आयो कन्त । कुशल बूझिबे के मिसहि लीन्हों बोलि इकन्त २५ ॥ अथ गणिका आगतपतिकाको उदाहरणं । कबित्त नागर बिदेशमें बिताई वहु द्योस आय नागरि के हियमें हुलसि निकसी खानकी । कबि मतिराम अंक भरि कै मयंक मुखी नेहै सरसाइ माही मति सुखदानकी । सुबरन बोलि के बतावतहै सुबरनही रजत लावतहै छबि मुसक्यनि

की । आँखिन तें आनंदके आंसू उमगाइ प्यारी प्यारे को दिखावत सुरति मुकतान की २६ ॥ दोहा ॥ फूली नागरि कामिनी उ-ड़ि गये नित्त मलिंद । आयो मित्र बिदेश ते भयो मुदित आनन्द २७ ॥ अथ उत्तमालक्षन दोहा ॥ पिय हित को अन हित करै आपकरै हित नारि । ताहि उत्तमा नायका कबि जन करत बिचारि २८ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ राति कहूँ रसके मन भावन आवन प्राण प्रिया घर कीनो । देखतही मुसक्याय तब उठी आगे ह्वै आदर कै फिरलीनो । मोहन के तन में मतिराम दुकूल सुनी लिनों हार नबीनो । केसरके रँगसों रँगिकै पटुपीतके प्रीतम के करदीनो २९ ॥ दोहा ॥ पिय अप-राध अनेक निज आंखिनहूँ लखिपाइ । तिय इकहूं कहुँ कन्तसों मानै करत लजाइ ३० ॥ अथ मध्यमालक्षण । दोहा ॥ पियसों हिततें हितकरै अनाहितकीनों मान । ताहि मध्यमा कहत हैं कबि मतिराम सुजान ३१ ॥ अथ उदाहरण । कबित्त ॥ आयो प्राणपतिरात अनते बिताई बैठी भौंहनि चढाइ रंगी सुंदरि

सुहागकी। बात न बनाई परेउ प्यारी के पगनि आइ छलसों छिपाइ छैल छविरत दामकी। छूटिगयो मानलगी आपहि सवाँ-रनको खिरकी सुकवि मतिराम पिय पाग की। रिसही के आंसू भरे आनंद के आं-खिन में रोष की ललाई सों ललाई अनुराग की ३२॥ दोहा॥ मेरे तन के रोम यह मेरेहि नहीं निदान। उठि आदर आगमन करि करों कौन विधि बाम ३३॥ अथ अधमाको लक्षण। दोहा॥ पिय सों हितहू क्यों किये करमानेयों बाल। तासों अधमा कहत हैं कवि मतिराम रसाल ३४॥ उदाहरण। कवित्त॥ आयोहै सयान पन गयोहै अजानमन नित उठिमान करि बैठ वह बावरी। घर घर मानिनी है माननाम नायो तबै तेरी ऐसी रीति अनकाहहू पै ना करी। कवि मतिराम काम रूप घनश्याम लाल तेरी नैन कोर और चाहै इकटकरी। हाहा कहै निहोरेहू न हेरति हरिन नैनी काहे को करति हठुहारिल को लकरी ३५॥ दोहा॥ कहा लियो गुरुमान को अति ताहीं है नेम। पारद सो उड़ि जायगो अलि अंचल यह

प्रेम ३६ ॥ इति नायका लक्षण समाप्तम् ॥ अथ नायक लक्षण दोहा ॥ तरुण सुघर सुन्दर सकल काम कलानि प्रवीन। नायक सों मतिराम कहि कवित रीत रसलीन ३७ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ गुच्छन को अवतंस लसै शिखि पक्षन अक्ष किरीटि बनायो। पल्लव लाल समेत छरीकर पल्लव-सो मतिराम सुहायो। गुंजनि के उर मंजुलहा-रनि कुंजनतेकढिबाहर आयो। आजुकोरूप लखै ब्रजराजको आजुही आंखिनको फल पायो ३८ ॥ दोहा ॥ परी भांवरे सांवरे राम रसिक रसजान। उनहीं में मन भ्रमत है हेवोटर को पान ३९ ॥ अथ नायकभेद । दोहा ॥ पति उपपति बासिक त्रिविध नायक भेद बखान। बिधिसों ब्याहौ पति कहत कबि कोविदमनजान ४० ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ पांव धरै दुलही जेहि ठौर रहै मतिराम तहां दृग दीने। छोड़े सखानके साथ को खेलबो बैठरहै घरही रसभीने। सां-झहीते ललकै मनहीं मनलालनयों रससों बशलीने। लोनी सलोनीके अंगनिनाहसुगौ-नेकी चूनरी टौनेसे कीने ४१ ॥ दोहा ॥ जा-

दिनते गौनोभयो आईलाल रसाल।तादिनते बिरहिनि भई हरिउठते बनमाल ४२ ॥ अथ नायकका वर्णन । दोहा ॥ नारि भांतिसों सबनये प्रथम कहत अनुकूल । दक्षिण गनिपुनि धृष्ट शठ रसशृंगार केमूल ४३ ॥ अथअनुकूलनायकलक्षण । दोहा ॥ सदाआपनी नारिसों जाके अतिही प्रीति । परनारीते बिमुखजो सो अनुकूलसुरीति ४४ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ क्योंहूं नहीं बिसरै निशिबासर मंद हँसी मुख चंद उज्यारी । त्योंहीं दियो अति नेहसों देहकी दीपकलासम दीपतिन्यारी । तेरिये ज्योति जगे हियभीतर आवत नारिन और अँध्यारी । नैननके अरुबैनहूंके तनहूं मनहूंके तुहीं अतिप्यारी ४५ ॥ दोहा ॥ सपनेहूं मन भावनो करत,नहीं अपराध । मेरेमनहींमें रही सखी मानकी साध ४६ ॥ अथदक्षिण लक्षण । दोहा ॥ एक भांति सबतियनसों जाको होय सनेह । सोदक्षिण मतिराम कह बरणत है मतिगेह ४७ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ सांझ समय ललना मिलिआई बड़ो जहँ नंद लला अलबेलो । आपनि पौरि बताइ कह्यो

अब आजु हमारिही पौरिमें खेलौ । खेलन को निशि चांदनी मोहन नयनमतो मतिराम सुहेलौ । त्यों हँसिकै ब्रजराज कह्योयह आजु हमरिही पौरिमें खेलौ ४८ ॥ दोहा ॥ दक्षिण नायक एकतुम मनमोहन ब्रजचंद । फुलये ब्रज बनितानके हग इन्दीवर वृन्द ॥ ४९ ॥ अथ धृष्टलक्षण । दोहा ॥ करै दोष निश्शंक ह्वै डरै न पियके मान । लाजधरै मनमें नहीं नायक धृष्ट निदान ५० ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ बरजो न मानतहो बार बार बरजो मैं कौनकाम मेरे इत भौनमें न आइये । लाजको न लेशजग हाँसीको न डरमन हँसत हँसत आन बातन बनाइये ॥ कवि मतिराम नित उठिकै कलंक करो नित नित सौंहें करो अंग बिसराइये । ताके पगलागो निशि जागि जाके उरलागे मेरे पग लागि लागि आगि न लगाइये ५१ ॥ दोहा ॥ आज नयन कुलटानिके आनिबसे ब्रजराज । हिये तिहारते सकल मानि निकारी लाज ५२ ॥ अथ शठकालक्षण । दोहा ॥ डरे करै अपराधही करै कपटकी प्रीति । बचन

क्रियामें अतिचतुर शठनायककी रीति ५३॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ मोतेतो कछु न अपराध परेउ प्राण प्यारी मानकरि रहीयोंही काहिके अरसते । लोचन चकोर मेरेशीतल ही होत तेरे अरुण कपोल मुख चन्दके दरसते । कहै मतिराम उठलागि उरमेरे कित करति कठोरमन अँसुवा बरसते । कोपते कटुक बोल बोलतिहै तऊमोको मीठे होतअधर सुधारस परसते ५४ ॥ दोहा॥ पियतरहौ अधरानको रस अति अधिक अमोल। ताते मीठे कढ़तहैं बाल बदनते बोल ५५ ॥ अथ उपपतिको । दोहा ॥ जो परनारीके रसिक उपपति ताहि बखान। प्रीतम जो गणिकानिको बैसिक ताहि सुजान ५६ ॥ अथ उपपतिकोउदाहरण । कवित्त ॥ सुन्दर सरससब अंगनि शिंगार साजि सहज सुभावनिशि नेह कछु केगई । कीन्हें मतिराम बिहँसोहें से कपोल गोल बोलिन अमोल बोल इतनाहीं दुखदैगई । मेरो ललचौहें मुखफिरके लजैहै ललचाहे चारु चषनि चितैके सो चली गई । निपट निकट हैके कपटसों छुवाइ अंग

लायकीसी लपट लपेट मन लैगई ५७ ॥

दोहा॥ नैनजोरिमुखमोरिहँसिसैनसुकनेहजनाय आगलेन आई दिये मेरेगई लगाय ५८ ॥

अथ बैसिककोउदाहरण । कबित्त ॥ आगमनवाहिचकचौर रह्यो तव ज्योति जगरमगर आभरन के नगन भो । यौबन के मद रूप मदवाके मैन मद छबि मतवारो ह्वैके थकित पगनभो । कहै मतिराम लोल लोचन बिशाल वाके तीक्षण कटाक्षण को भेद के लगन भो । बार बार घूमि बार बधूबार भौरनि में मांगनकी मुक्तमाल गात में मगनभो ५९ ॥

दोहा ॥ लोचनपानि गपाढ़ि सजी लटबंशी परबीन । मोमन बारबिलासिनी फाँसिलियो मनुमीन ६० ॥

अथ अन्यनायक भेद । दोहा ॥ मानि वचन चातुर कह्यो क्रिया चतुर पुनिजान । तीनभांति ऐसे कहत नायक सुकबि बखान ६१ ॥

अथ मानीलक्षण । दोहा ॥ करत नायका सो कहूं जो नायक अभिमान । तासों मानी कहतहैं कबि मतिराम सुजान ६२ ॥

अथउदाहरण। कबित्त ॥ बहु सुधि करो क्यों न नयन नल नीके दल सेज सारे सीरे सरसि जनि

बिछाइये। अमल उशीर इंदु चन्दनगुलाब नीर कहांलगि और उपचारनि जनाइये। छलबल छलबाको में मिलायके जिवायतब कबिमतिराम अम्ब साहिबी जनाइये। ऐसो मन भावन गुमान है जुप्यारी के मनाइबे मनाइबे को तुमको मनाइये ६३॥ दोहा॥ यामें कौन सयान है मोहनलाल सुजान। आपकरत अपराधही आपहि करत गुमान ६४॥ अथ बचन चतुरताका लक्षण। दोहा॥ बचननिमें जो करत है चतुराई मतिराम। बचन चतुर नायक सरस लीजे जानिसकाम ६५॥ अथ उदाहरण। कवित्त॥ दूसरे की बात सुनि परत न ऐसी जहां कोकिल कपोतन की धुनि सरसाति है। छाई रहै जहां द्रुम बेलिनसों मिलि मतिरामअली कूलनिमें अँध्यारो अधिकाति है॥ तरुवर से फूलिरहे फूलनकी कुंजघन कुंजनमें होत जहां दिनहू में राति है। ताबनकी बाटकोऊ संग ना सहेली कहि कैसेतू अकेली दधिबेचनको जाति है ६६॥ दोहा॥ तोको देउ बताइकै तूकित होत उचाट॥ ग्वालिनि दधिबेचन गई बंशी

बटकी बाट ६७ ॥ अथ क्रिया चतुरका लक्षण । दोहा ॥
करै क्रियासों चातुरी जो नायक रसलीन। क्रिया चतुरताको कहत कबिमतिराम प्रबीन ६८॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ नँदलालगयो तितही चलिकै जित खेलति बालसखी गनमें । तहँ आपही मूंदि सलोनी के लोचन चोर मिही चनिखेलन में । ढूरिबेको गई सिगरी सखियां मतिराम कहै इतने क्षनमें । मुसक्याइ के राधिका कंठलगाय छिप्यो कहुँ जाय निकुंजनमें ६९ ॥ दोहा ॥ सांझ समय बहु छैलकी छलनि कही नाहिंजाय । बिन डर बल डरवाइकै लियो मोहिं उरलाय ७० ॥ अथ प्रोषितनायक लक्षण । दोहा ॥ नायक होय बिदेश में जो वियोग अकुलाय । तासों प्रोषितकहतहैं जेप्रवीनकबिराय ७१ ॥ अथ उदाहरण । कबित्त॥ प्यारेपगेबचन पिगूषपान करिकरि उमँगि उमँगि तिय आनँद बिशेषिहैं । कबिमतिराम तनतपनि बुझाय जैहै त्यौंनिज जनम सुफलकरिलेखिहैं । हीतलको शीतल करन चारुचांदनीसी मंदमृदुमुसक्यानि आनमि षपेखिहैं । ह्वैहै तो निराश मेरेलोचन चकोर-

नकी जबवाको आनन अमलइन्दुपेखिहैं ७२ ॥ दोहा ॥ प्रफुलित सुमनसुबास में करबोआनँद केलि। सोनीको उसलागिहै उर सोने कीबालि ७३ ॥ अथ दर्शन लक्षण । दोहा ॥ दरशन आलम्बनहिंमें कबिमति राम बखानि । श्रवण स्वप्न अरु चित्र पुनित्यों प्रत्यक्षहि जानि ७४ ॥ अथ श्रवणदर्शनको उदाहरण । सवैया ॥ आनन पूरण चन्दलसे अरुबिन्दु बिलास बिलोचन पेखे। अंबर पीतलसे चपलाछबि अम्बुद मेचक अङ्ग उरेखे। कामहुते अभिराम महा मतिरामहिये निहचै करिलेखे। तेबरणे निजबैननि सों सखिमैं निज नैननिसों मनदेखे ७५ ॥ दोहा ॥ जैसो तुम बरणयोसखी रूप कान्हको आय। तैसोई मेरेचषन रह्योआय ठहराइ ७६ ॥ अथ स्वप्नदर्शनको उदाहरण । सवैया ॥ आवतमें हरि के सपनेलखि मैंसुकबाट सकोचन छोड़ी ॥ आगे ह्वै ठाढ़े भयेमतिराम चले सुचितेचष लाल चयेड़ी। हौंठनको रस लेनको मोहन मेरी गही करकांपत ठोड़ी। और भटून भई कछुबात गई इतनेहींमें नींद निगोड़ी ७७ ॥ दोहा ॥ पिय मिलापको सुखसखी

कह्यो न जात अनूप। सो तुमसों सपनो भयो सपनो सो सुखरूप ७८ ॥ अथ चित्रदर्शन का उदाहरण। कबित्त ॥ आलस भगात परस भ जान्यो जात कही कहीहि न सुनत बात ना कही। सूंघैना सुबास सुमननिकी समुझि परी टकटकी बड़े बड़े दृगनमें उलही। कवि मतिराम ताहि नेकु परवाहि नाहिं ऐसी भांति भई वह तेरे नेहसों नही। येरे चितचोर चालि चन्दमुखी ताहि चित्र चित्रही में चाहि चाहि चित्रहीमें ह्वैरही ७९ ॥ दोहा ॥ चित्रहुमें जाके लखै होय अनन्त अनन्द। सपनेहूं कबहूं सखी सो मिलिहै ब्रजचन्द ८० ॥ अथ प्रत्यक्षदर्शनको उदाहरण। कबित्त ॥ मोहन लालको मनमोहनी बिलोकि बाल कसी करि राखतहै उमँग उमाहको। सखिनकी दीठिको बचायकै निहारतहै आनँद उमाह बीच पावति न थाहको। कवि मतिराम और सबहीके देखतही ऐसीभांति देखत छिपावत उछाहको। वेई नैनरूखेसे लगत और लोगनको वोही नैनलागत सनेह भरे नाहको ८१ ॥ दोहा ॥ नन्द नँदनके रूपपर

रीझि रही रिझवारि। अध मूंदी अँखियन दई मूंदी प्रीति उघारि ८२॥ अथ उद्दीपनभावलक्षण। दोहा॥ चन्द कमल चंदन अगर ऋतुवन बाग विहार। उद्दीपन शिंगारके जेउज्वलशिंगार ८३॥ अथ उदाहरण। सवैया॥ पूरण चन्द उद्योत कियो घनफूलि रही बनजात सुहाई। भौंरनकी अवलीकलके रवि कुंजनिमें मृदुमाय बजाई। ताननि कामकेवाननसों मतिराम सबै सखिया अकुलाई। गोपिन गोप कछू न गने अपने अपने घर तें उठि धाई ८४॥ दोहा॥ सखी दूतिका जानियो उद्दीपनको भेद। नायक अरु नायकनिको हरै विरहको खेद ८५॥ अथ सखीलक्षण। दोहा॥ ज़ातियसों नाहिं नायका कछू छिपावै बात। तासों वरणत सहसखी कविमति सब अवदात ८६॥ अथ सखीकर्म्म लक्षण। दोहा॥ मण्डन औ शिक्षा करन उपालम्भ परिहास। काज सखिनको जानियो औ ये बुद्धि बिलास ८७॥ अथ मण्डनयथाउदाहरण। सवैया॥ जावक रंग रँगे पदपंकज नाहको चित्तरँग्यो रँग यातें। अंजन देकर नैननिमें सुखमा बढ़ी

श्याम सरोज प्रभातें। सोनेके भूषण अंग रच्यो मतिराम सबै बश कीबेकि घातें। योंहिं चलै न सुभाव शिंगारहिमें सखि भूलि कही सब बातें ८८ ॥ दोहा ॥ सखीपियाकी देहमें सजे शिंगार अनेक। कजरारी अँखियानमें भूल्यो काजर एक ८९ ॥ अथ शिक्षाउदाहरण । कवित्त ॥ मलयको पवन मन्द मन्दके गवन लयो फूलनके वृन्दनसे मकरन्द ढारने। कवि मतिराम चित्त चौर चारोंओर चाहि लाग्यो चैत चन्द चारु चांदनी पसारने। आलिनकी आली आली मैनकैसे मंत्रपाढ़ि लागी माननीनके मनन मान झारने। सुमन शिंगार साजे सेज सुखसाजि करो लाज करो आज ब्रजराज परवारने ९० ॥ दोहा ॥ कित सजनीहै अनमनी अँसुवाती करि शंक। बड़े भागनँदलालसों झूठहु लगत कलंक ९१ ॥ अथ उपालम्भ उदाहरण । कवित्त ॥ मानकी कहानी कहापानी को न पान करै आहिकर उठत अधिक उर आधि कै। कवि मतिराम भई बिकल बिहाल बालराधिकै जिवावरे अनंग अव-

राधिकै। याही को कहायो ब्रजराज दिन चारिही में करी है उजारि ब्रज ऐसी रीति नाधिकै। जैसे तूने मोहन बिलोक्यो वाकी ओरतेंस बैरहूंसो बैरिन बिलोकै बैरु माधिकै ९२ ॥ दोहा ॥ वाको मनलीन्हों ललाबोल्यो बोल रसाल। झुकति तनकही बातमें ललित बोलि बरबाल ९३॥ अथ परिहास यथाउदाहरण। सवैया॥ गौनके द्योस कहै मतिराम सहेलिनि को मिलके गन आयो। कंचनके बिछिया पहिरावत प्यारी सखी परिहास बढ़ायो। प्रीतम श्रोण समीप सदाबजैंयों कहिके पहिले पहिरायो। कामिनि कुंज चलावन को कर ऊंचो कियो पै चल्यो न चलायो ९४ ॥ दोहा ॥ प्रभा तरोना लाल की परी कपोलन आनि। कहा छिपावत चतुर तिय कन्त दन्त छत जानि ९५॥ दोहा ॥ भुज फुले बतावत सखी कर चलाय मुसकाय। गाढ़े गह्यो उरोज पिय बिहँसी भौंह चढ़ाय ९६ ॥ अथ दूती लक्षण। दोहा ॥ निपुण दूतिताामें सदा दूती ताहि बखान। उत्तममध्यम अधमयों तीनभांति सो जान ९७ ॥ अथ उत्तमदूतीलक्षण। दोहा ॥ मोहै जो

मन बोलिके न कर बचन अभिराम । ताहि कहत कविराज यह उत्तम दूतीनाम ९८ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ जादिन मतिराम मुसक्यानि वाकी देखी तुम तादिनते चढ़ी रही पिय पियराईपर । नेक उठि देखो बड़े भाग हैं तिहारे ललामोलि राखो राधिके कन्हाई हिय राईपर । दूनी द्युति छाई देह आई दुबराई पिय राई लोन बारिये तियाकी पियराईपर । भावत न भौन बनावति न आभरन है तन करति सुधानिधि शिथराईपर ९९ ॥ दोहा ॥ तियके हियके हननको भयो पंच शरबीर । लाल तुम्हें बशकरनको रहे न तरकसतीर २०० ॥ अथ मध्यमदूती लक्षण । दोहा ॥ कछु बचन हितकर कहै बोलै अहित कछुक । मध्यम दूती कहत हैं तासों सुकबि अचूक १ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ चरणधरै न भूमि विहरै जहां तहां फूले हैं फूलोंने बिछायो परयंक है । मारके डरन सुकुमारिचारु अंगन में करतिन अंगराग कुमकुमको बंकहै । कबि मति राम देखि वातापनबीच आयो आतप मलिन होतबदन मयंकहै । कैसे वह बाल

लाल बाहर बिजन आवै बिजन बयारि लागे चलति कलंक है २ ॥ दोहा ॥ रीझि रही रिझवार वह तुम ऊपर ब्रजनाथ । ज्यों सिन्धुर की इन्दिरा क्योंकर आवै हाथ ३ ॥ अथ अधमदूती लक्षण । दोहा ॥ अधमदूतिका जानियो बचन कहै सतराय । ग्रन्थन को मत देखिकै बरणत हैं कबिराय ४ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ जानत न कछुये कहावत रसिकराय लावल्याय तबहीं तिहारे यह टेक है । कूरनकी रीति है जो डेल ऐसो डारदेत मतिराम चतुराई चतुर लिये एक है । बोली न बोली कहै कछु बोली सतराय वह मनसिज ओजको सुहानो कछु सेक है । बातन सुनत अँगरात अलसात गात सोहै करिनयन बिहँस्यो है भई नेक है ५ ॥ दोहा ॥ यौवन मण्डित आपनो अजो न जानत गात । सोति तमों अति चटपटी निपटै अटपटी बात ६ ॥ अथ भाव लक्षण । दोहा ॥ लोचन बचन प्रसाद मृदु हास बाम धृतमोद । इनते परघट जानिये बरणत सुमति बिनोद ७ ॥ जिनते चित रुचि भावको आछो अनुभव होय । रस शिंगार

अनुभावते बरणत कबि सब कोय ८ ॥ अथ भावको उदाहरण । सवैया ॥ गहि हाथसों हाथ महेलीके साथ में आवतिही बृषभानुलली। मतिराम सुवाते आवत नीरे निवारति भौंरन की अवली । लखिके मनमोहन सों सकुची कह्यो चाहति आपनी ओट लली। चित चोरि लिया दृगजोरि तिया मुखमोरि कछू मुस्क्याय चली ९ ॥ दोहा ॥ सहज बात बूझत कछू बिहँसि नवाईग्रीव । तरुण हिये तरुणी दई नयनेहकी सीव १०॥ अथ अनुभावलक्षण । दोहा ॥ ते अनुभावहि जानियो जोहै सात्त्विक भाव । रसग्रन्थन अवलोकिकै वरणत सब कविराव ११ स्तम्भस्वेद रोमांच स्वरभंग कन्पवैवर्ण्य । आंसू और प्रलापकहि आठों ग्रन्थनि निर्णय १२ ॥ अथ स्तम्भलक्षण । दोहा ॥ लज्जा हर्षादिकंनते अचल होत जहँ अंग । स्तम्भ कहत कवि ताहिको जे प्रवीण रसरंग १३ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ देखतही मतिराम रसाल गही मति प्यारीकी प्रेमनि गाढ़ी । चाहिबेकी चित चाह भई हियमें कुलकानिकी काननि

काढ़ी। पाई परे मगमें नमरुंके भईमिसला जनि करिफिरि ठाढ़ी। संगसखीन के जानि दुरावत आनन आनँदकी रुचिबाढ़ी १४॥ दोहा ॥ पाय कुंज एकान्तमे अंकभरी ब्रज नाथ। एकनको तियकरतिहै कह्यो करत नहिं हाथ १५॥ अथ स्वेदलक्षण। दोहा॥ हरषलाज भय कोपश्रम इत्यादिकते होय।पानीप्रगटत देहते स्वेद कहावत सोय १६॥ अथ उदाहरण। सवैया॥ किङ्किणि नेवरकी झनकारनि चारु पसारि महारस जालहि। कामकलोलनिमें मतिराम कलानि निहाल कियो नँदलालहि। स्वेदके बृन्द लसे तनमें रति अन्तरही लप-टाय गोपालहि। मानो चली मुक्ताफल पूजन हेम लता लपटाइ तमालहि १७॥ दोहा॥ कुचते श्रमजलधार चलि मिलिरोमा वलिरंग। मनोमेरु गिरितरहटी भयो सिता सित संग १८॥ अथ रोमांचलक्षण। दोहा॥ हरष भयादिकते.प्रकट रोम उमगजोअंग। ताहि कहत रोमांचहैं कविजन सुमति उतंग १९॥ अथ उदारण। कवित्त॥ चन्दमुखी हांसीमें चमेली की लतासी होति चंपक लतासी ज्योति

अंगनि धरतिहै। कवि मतिराम तेरी अंग की सुवास लहै कोनवेली ऐसीबात जानी न परतिहै। नेसुकनिहारेते नवेली नयनकोरनिमों ऐसी अद्भुतकी कलानि उच्चरतिहै। सुंन्दर ललित माल श्याम रसिक रसाल सों कदम्बते पुलकि मुकूलनिसों करतिहै २० ॥ दोहा ॥ जौन अंग ढिगह्वै कढ़ी छुई छैलकी चाहि। अबहूंलौं अवलोकिये पुलक पटलता ताहि २१ ॥ अथ स्वरभंगलक्षण। दोहा ॥ क्रोधहर्ष मदभीतते वचनऔर विधि होय। ताहि कहत स्वरभंगहैं कवि कोविद सबकोय २२ ॥ अथ उदाहरण। सवैया ॥ ताहि लै आई अली अति मन्दिर जाकीलगै रतिहू पर छाहीं। आयगयो मतिरामतहीं जिन कोटिनकाम कला अवगाहीं। देखतहीं सिगरी वपुरी पकरी हँसिपै तियकी पियबाहीं। लाजनते स्वरभंग भई सोकटी मुखचन्द मरू करिनाहीं २३ ॥ दोहा ॥ कहा जनावत चातुरी कहा चढ़ावत भौंह। अधानि करै अँखियानसों सोहैंकीजाति सौंह २४ ॥ अथ कम्पलक्षण। दोहा ॥ क्रोधहरर्ष भयआदिते थर

थरात ज्योंदेह । ताहि कम्प यों कहतहैं कवि कोविद मतिगेह २५॥ अथ उदाहरण । सवैया॥ चन्द मुखीअरविन्दकी मालनि गूथति रूप अनूप बेगारेउ। काम स्वरूप तहां मतिराम अनन्दसों नन्दकुमार सिधारेउ॥देखतकम्प छुट्यो तिनके मन यों चतुराईको बोल उचारेउ। सीरे सरोज लगी सजनी कर कम्पत जात न हार सँवारेउ २६ ॥ दोहा ॥ लाल बदन लखि लालके कुच न कंपरुचि होति । चपलहोत चकवा मनो चाहि चन्द की ज्योति २७॥ अथ वैवर्ण्यलक्षण । दोहा ॥ मोह क्रोध भय आदिते बरन और बिधि होय। ताहि कहत वैवर्ण्यहैं सकल सयाने लोय २८॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ छलसों छबीलीकोम हेलिनि लिवायकरि ऊपर अटारीरूप रच्यो जाय ख्यालको। कविमतिराम भूषणनि की झनक सुनि चाहिभौं चपल चितु रसिक रसालको। अली चली सकल अलोक मिस करि करि आवत निहारकरि मदन गोपालको। लालन को इन्दुसों बदन अवलोकि अरविन्दुसों बदन कुम्हिलाइ

गयो बालको २९ ॥ दोहा बाल रही इकटक निरखि लालवदन अरबिन्द । सियराई नयनानि परीपियराई मुखचन्द ३० ॥ अथ अश्रुकालक्षण । दोहा ॥ हर्ष दुःखभयआदिते जल आवै अँखियानि । ताहि बखानतअश्रुकहि ग्रंथन को मतजानि ३१ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ बैठेहु तेलालमन मोहन मोहनी बाल छिन कुसकुच राखै गुरुजन भीरको । कबिमति राम दीठ औरकीबचाय देखै देखतही और भयराखै अवधीरको । तनको नमोह धरै मनकीखबर भूली आंखिन सों छायो पुर अनँद केनीरको । उमँगिहियेते आयो प्रेमको प्रबाहताते लाज गिरी परी जैसे त रुवर तीरको ३२ ॥ दोहा ॥ बिनदेखे को चलै दुख सुख को देखै जाहि । कहोलाल इनदृगनिके अँसुवाक्यों ठहराहि ३३ ॥ अथ प्रलयकालक्षण । दोहा ॥ जीवइतनमें होतहै येही सकल निरोध । हर्ष दुःख भयआदि ते प्रथम कहति मति शोधि ३४ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ जादिनते छबि सों मुसक्यात कहा निरखै नंदलालबिलासी । ताक्षणते

मन हीं मनमें मति राम पियै मुसक्यान सुधासी। नेकु निमेषनलागत नयनानि चौंकि चितै तिय देव तियासी। चंदमुखी न हलै न चलै बिरबात निवासमें दीप शिखासी ३५॥ दोहा॥ तोमें अनासिखमेनता मोहन मूरति मैन। अनासिख नय न सुने ये निरखत अनमिष नैन ३६॥ अथ जम्भालक्षण। दोहा॥ जंभा को कवि कहत हैं नवमो सात्विकभाव। उपजै आलस आदिते बरणत सब कवि-राव ३७॥ अथ उदाहरण। कवित्त॥ केलि करि सकल रीति प्रात उठी अलसात नींदभरे लोचन युगल बिलसतु हैं। लाजनिते अंग-नि दुरावतिहैं बार बार खैंचिकरि वसन बिहारी बिहँसतु हैं। कबिमतिराम आई आलंस जम्हाई मुख ऐसो मन भावती की छबि सरसतुहैं। अरुण उद्योत मानो शोभा के सरोवर में शोभा मनि शोभा को सरोज विकसतु हैं ३८॥ दोहा॥ आयो पीव विदेशते बहुतक दिवस बिताय। सखी उठाई पासते सांझहिंते जमुहाय ३९॥ अथ शृंगारलक्षण। दोहा॥ जो बरणत तिय पुरुषको, कविकोबिद रति

भाव। तासों रीझत सुकबि हैं सो शृँगार रसराव ४० ॥ कहि शृंगार रसभावहू प्रथम कहत संयोग। ग्रन्थनिको मत देखिकै दूजो कहत वियोग ४१ ॥ अथ संयोगलक्षण। दोहा प्रमुदित नायक नायका जहँ शृंगार में होय। सोह सँयोग शृँगाररस बरणत सुप्रतिउदोय ४२ ॥ अथ उदाहरण। सवैया ॥ प्राण पिया पिय आनँदसों बिपरीत रची रतिरङ्ग रह्योहै। काम कलोलनिमें मतिराम रहो धनियों कल किंकिणिकोहै। आननकी उजियारी परी श्रम बिन्द सरोज उरोजलसो है। चंद की चांदनिके पर से मनो चंद पखाव पहार चलोहै ४३ ॥ दोहा ॥ छुवति परस्पर हेरिकै राधानन्दकिशोर। सबमें दोही होति हैं चोर मिहचनी चोर ४४ ॥ अथ हावलक्षण। दोहा ॥ नारिन को शृंगार में यहां कहौं अबहाव। ते सँयोग शृंगार में बरणत हैं कविराव ४५ ॥ अथ विक्षिप्तलक्षण। दोहा लीला प्रथमबिलास पुनित्यों विक्षिप्तबखानि। बिभ्रमकिलकिंचितबहुरि मोट्टायितउरआनि ४६ ॥ अथ कुट्टमितलक्षण। दोहा ॥ बहुरिकुट्टमित कहतहैं पुनि बिब्बोक बखा-

नि । ललित बरण पुनि विहँसि कहि सकल हाव दशनानि ४७ ॥ अथ लीलाहावलक्षण । दोहा ॥ पिय भूषण वचनादिकी लीला करैजोबाल तासों लीला हावकहि बरणत सुमति रसाल ४८ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ प्यार पगी पगरी पियकी घरभीतर आपन शीश सँवारी । एतेमें आंगनते उठिकै तहँ आय गयो मतिराम बिहारी । देखि उतारन लागी प्रिया पिय सौंहनि सों बहुरेउ न उतारी । नयनानि बाल लजायरही मुसक्याय लई उरलाय पियारी ४९ ॥ दोहा ॥ मेरे शिर कैसीलगै यौंकहि बांधीपाग । सुन्दरि रति विपरीतमें कियो प्रकट अनुराग ५० ॥ अथ विलासलक्षण । दोहा ॥ गमन नयन वचनानिमें होत जु कछुक विशेष । वरणत ताहि विलास कहि रसमय सुकवि अलेख ५१ ॥ अथ उदाहरण कवित्त ॥ किंकिणि कलितकल नूपुर ललितरव गौनै. तेरो. देखिकै सकति करि गौनको । मृदुमुसकायानि मुख चंद चांदनीसों राखिकै उज्यारो धाम नाम रामद्वारा भौनको । सहज सुभावनसों मो-

इनके भावनसों हरतिहैं कविमतिराम मन रौनको । रूपमद छकीआनि छबिसो छबी-लीदेति तिरछी चितौनि मैनबरछीसी केन को. ५२ ॥ दोहा ॥ तेरी चलनि चितौनि मृदु मधुर मन्द मुसक्यानि । छायरही लखि-लालकी सखियन मिस अँखियानि ५३ ॥ अथ विक्षिप्तलक्षण । दोहा ॥ थोड़ेही भूषण बसन जहँ शोभा सरसाय । ताहिकहत विक्षिप्तहैं जे प्रवीण कविराय ५४ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ वारने सकलएक रोरीऔंकीआड़परहाहान पहिरि आभरन औरअंगमें । कवि मति-राम जैसे तीक्षण कटाक्ष तेरे ऐसेकहा सरस है अनंगके निषंगमें । सहज सुरूप सुध-राई रीझो मनुमेरो लुभिरह्यो देखि रूप अद्भुतकी तरंगमें । सेतसारीहीसों सबसों तो रँग्योश्यामरंग सेतसारीही में श्यामरंग लालरंगमें ५५ ॥ दोहा ॥ नथुनी गजमुक्तानकी लसति चारु शृंगार । जिनएही सुकुमार तन और आभरन भार ५६ ॥ अथ विभ्रमलक्षण । दोहा ॥ उलटे भूषण वसनको होत जहाँ पहिराव । वासों विभ्रमहावकहि

वरणतहैं कविराव ५७ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥
सांझहिते चलि आवत जात जहां तहां
लोगनिहूं न डरूंगी । प्रीतमसों रतिही यह
रूप धोयेहैं कहां जब अङ्क भरोंगी । जांन-
तिहौं मतिराम तऊ चतुराईकी बातनि
हीय धरूंगी । किंकिणिके उरहारकिये तुम
कौनसों जाय बिहार करोगी ५८ ॥ दोहा ॥
अति आतुर ह्वै चल भई अली कौनके
भाग । उलटी कंचुकि कुचनपर कहैं देत
अनुराग ५९ ॥ अथ किलकिंचितलक्षण । दोहा ॥ हरष
गरब अभिलाष श्रम हास रोष अरुभीति ।
होत एकहीबार है किल किंचितकी रीति
६० ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ लालन बालके है
हीदिनावें परीमन आइ सनेहकी फांसी ।
काम कलोलनिमें मतिराम लगी मनोबांट
न मोदकी आंसी । प्रीतमके उर बीजबयो
दुलहीके बिलासमें मनोजकी गांसी । स्वेद
बढ्यो तनकंप उरोजनि आँखिन आंसु
कपोलन हांसी ६१ ॥ दोहा ॥ सकुचि न रहिये
सांवरे सुनि गरबीले बोल । चढ़त भौंह बिक
सतनयन बिहँसत गोल कपोल ६२ ॥ अथ

मोट्टायितलक्षण । दोहा ॥ बातनको प्रकटन भयो पुनि मिलापकी चाह । सोमोट्टायित जानि ये बरणत सब कविनाह ६३ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ फूलिरहे द्रुमबेलिनसों मिलिपूरिरहीं अँखियाँ रतनारी।मों॥हिंअकेलीबिलोकियहां कछुऔरइसीभईदीठिनिहारी। जैसेहुतीहमसों तुमसों अबहोयगीऐसीयेप्रीतिनिहारी । चाहत जो चित मोंहितो जानिबोलिये कुंजनबीचबिहारी ६४ ॥ दोहा ॥ झूठेहूं जग मेंलग्यो मोंहिकलंक गोपाल । सपनेहूं कबहूंहिये लगेनतुम नँदलाल ६५ ॥ अथ कुट्टमितहासलक्षण । दोहा ॥ जहांदुःखअरुसुक्खको प्रकटकरै हियबाम । परम ललित यह हावतहँ कुट्टमित्त यहनाम ६६ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ सोने कीसी बेलि अति सुन्दरिनवेली बाल होत ठाढ़ी हीअकेली अलबेली द्वार महियां । मतिराम आँखिन सुधाकी बरषासीभई गईतबदीठवाके मुख चन्दपहियां । नेकुनीरेजाय करिबातनि लगाइकरि कछु मनपायकरि आयगही बहियां । मैननमें चरचिलई गाननमें थकित भई नैननिमें

चाह करै बैनानि में नाहियां ६७ ॥ दोहा ॥ प्रीतम कोमन भावती मिलत बांह देकण्ठ । बांहीं छुटैनकण्ठते नाहीं छुटै न कण्ठ ६८ ॥ अथ बिब्बोकलक्षण । दोहा । जो पियके अभिमानते करति अनादरबाम । ताहि कहत बिब्बोक हैं जे प्रबीण गुणधाम ६९ ॥ अथ उदाहरण।सवैया॥ मानहु आयो है राजकहूं चढ़िबैठ्योहै ऐसे पलाश के खोढ़े । गुंज गरे शिरमोर पखा मतिरामहूं गाय चरावत छोढ़े । मोतिनको मेरो हार गहे हाथनिसो रही चूनरी ओढ़े । ऐसेहि डोलत छैल भये तुम्हें लाज न आवत कामरी ओढ़े ७० ॥ दोहा ॥ प्राण पियारो पगपरेउ तू न लखति यहि ओर । ऐसो उरज कठोर तो न्यायहि उरज कठोर ७१ ॥ अथ ललितहावलक्षण । दोहा ॥ बनै माणिकनसों सरस सकल आभरण अंग । ललित हाव तासों कहत जेकबि बुद्धउतंग ७२ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ मंद गयंद कि चाल चलै कटि किंकिणि नेवरकी धुनिबाजे । मोती के हारनि में हियरा हियरा हरिजू हुलसावनि साजे । मारीसुहीमतिराम लसै

मुखसंग कीनारी कियो छबिछाजै । पूरण चंदपियूष मयूष मनो परिवेषकी रेख बिराजै ७३ ॥ दोहा ॥ मिरी अधर अंजननयनमेंहँदी पग अरुपानि । तनकंचन के आभनर नीठि परेपहिंचानि ७४ ॥ अथ बिहतलक्षण । दोहा ॥ जोपरि पूरण होत नहिं सिय समीप अभिलेख । ताकोबिहत बखानियो जिन की कबितादेख ७५ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ सकलसहेलिन केपीछे पीछे डोलितिहै मंद मंद गौन आजु आपुहि करतुहै । सनमुख होत मुखहोत मतिराम जबै पौन लागे घूंघुट को पटउघरतुहै । यमुनाकेतट वंशी वटकेनिकट नंदलालपै सकुचानि तैं चारह्योनपरतुहै । तनतोतियाको बरभांवरे भरतमन सांवरेबदनपर भांवरेभरतुहै ७६ ॥ दोहा ॥ रूपसांवरो बदनपर सुधासिन्धुमें खेल । लखि न सके अँखियां सखी परी लाज की जेल ७७ ॥ अथ बियोग शृंगारभेद । दोहा ॥ प्यारी पीवमिलापबिन होतनहीं आनन्द । सोवियोग शृंगार को बरणत सबकबि वृन्द ७८ ॥ अथ बियोगकोभेद । दोहा ॥ कही पूर्व अनु-

राग अरु मानप्रवास बिचार । रसशृंगार बियोगके तीन भेदनिरधार ७९ ॥ अथ पूर्वानु रागलक्षण । दोहा ॥ जोपहिले देखै सुनै बढ़ै प्रेम की लाग । बिनमिलाप जो बिकलता सो पूर्वा अनुराग ८० ॥ अथ उदाहरण सवैया ॥ न्योते गयेकहुं नेहबाढ्यो मतिराम दुहूं केलगे दृगगाढ़े । लाल चले मेनिके घर को तिय अंग अनंग की आगसों डाढ़े । ऊंचे अटापर कांधे सहेली के ठेढ़ी दिये चितवै दुखबाढ़े । मोहनजोमनगाढ़े करै पग दैके चलै फिरिहोत है ठाढ़े ८१ ॥ दोहा ॥ निरख्यो नेह दुहूनकी नईदईयह बात । सूखति देह दुहूनकी त्यों पानीसर सात ८२ ॥ अथ मानभेद दोहा ॥ मानकहतहैं तीनिविधि लघुमध्यम गुरुभाम । तिनके भेद बनायकै बरणत कवि मतिराम ८३॥ अथ लघुमानभेद । दोहा ॥ और वामको लखत जहँ लखै कन्तको बाल । बरणतहै लघुमान सो छूटततन कहि ख्याल८४ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ देखति और तिया पियको लखिमानछबी-लीके नैननिछायो । प्रीतमयों चतुराई करी

मतिराम कछु परिहास बढ़ायो । रीतिरची विपरीति जो प्रीतम ताको कवित्त बनाय सुनायो । भूलिगई रिस लाजनिते मुसक्याय प्रिया मुखनीचेको नायो ८५ ॥ दोहा ॥ मान जनावति सबनको मन न मान कीठाट । बाल मनावनको लखे लालतिहारी बाट ८६ ॥ अथ मध्यममानलक्षण । दोहा ॥ पियमुख औरै नारिको सुनैनाम जहँनारि । होत मान मध्यम तहां वरणत सुकवि विचारि । ८७ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ आनँदसों दोउ आंगनमाझ बिराजैं अषाढ़की सांझ सुहाई । प्यारीके पूछत और तियाको अचानक नाबलियो रसिकाई । आयो बनैमुहमें हँसि कोउ तिया शरचापसों भौंहें चढ़ाई । आंखिनते गिरे आंसूकेबूंद सुहासगयो उठि हंसकी नाई ८८ ॥ दोहा ॥ मेरे देवता भाव सब वह तुमको बलिजाउँ । वाहीको मन ध्यानहै वाहीको सुखनाउँ ८९ ॥ अथ गुरुमान लक्षण । दोहा ॥ बोलत और तियानसों पियको देखै बाम । होत तहां गुरुमानहै बरणत कवि मतिराम ९० ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥ मेरे

प्राणप्यारे कहुँ सहज सुभाव प्यारी कहा मोकही जो कछुवात काहू बालसों। कवि मतिराम मेरोकह्यो आली ठानी जनमान ऐसे मदन गोपालसों। ताको ऐसीरिसकरि अयानकी रीतितूतो दीपकीसी ज्योति जगयौबन रसालसों। भौंहें करि रूंधाविहँ-सोहैंकरि कपोलगोल सोहैंकरि लोचनरसोहैं नन्दलालसों ९१ ॥ दोहा ॥ बहुनायक सों बातमें मानभलो न सयान। दुखसागरमें बूड़िहैं बांधिगरे गुरुमान ९२ ॥ अथ प्रवासलक्षण। दोहा ॥ प्रीतमबसै विदेशमें बिरह जहां सरमाय। वरणत तहां प्रवासहै जे प्रबीण कविराय ९३ अथ उदाहरण। सवैया ॥ धुरवान कि धावन मानों अनंग तुरंगधुजा फहरान लगी॥ मतिराम समीर लगे लति कावि रहीवनिता थहरान लगीं। मनमें अलि ह्वै क्षितिमें अलछैं चपलाकि छटा छहरानलगी। परदेशमें पीउ सँदेश न,पायो पयोद घटा घहरानलगी ९४ ॥ दोहा ॥ चलत लालके मैं कियो सजनी हियो पषान। कहाकरौं दरकत नहीं इते वियोग कृशान ९५ ॥ अथ वियोग

शृंगारदशाकथन । दोहा ॥ हौंकि वियोग शृंगारमें प्रकट दशा नव जानि । प्रथम कहैं अभि-लाष पुनि चिन्ता स्मृति मन मानि ९६ ॥ दोहा ॥ गुण वर्णन उद्वेगपुनि कहि प्रलाप उन्माद । व्याधि बहुरि जड़ताकहत कवि कोविद अविवाद ९७ ॥ अथ अभिलाषलक्षण । दोहा॥ ताहि कहत अभिलाषहैं ज्यों मिलापकी चाह । प्रेम कथनतें जानिये बरणत सब कविताह ९८ ॥ अथ उदाहरण । सवैया ॥ मोरपखा मतिराम किरीट मनोहर मूरतिसों मनु लैगो । कुण्डलनि गोल कपोलनि बोलनि नेमके बीजन बैगो । लोल विलोचनि कारनि सों मुसक्याय इतै अरु झाड़ चितैगो । एक घरी घनसे तनसों अँखियानि घनो घन सारसों दैगो ९९ ॥ दोहा ॥ मोमन सकलौ उड़िगयो अबकेहुन पतियाय । बंसिमोहन बनमालमें रह्यो बनाय बनाय ४०० ॥ अथ चिन्तालक्षण । दोहा ॥ दर्शन सुखकी भावना करै चित्तकी चाव । चिन्ता तासों कहत हैं जे प्रवीण कविराव १ ॥ उदाहरण । सवैया ॥ जे-हौअकेली महावनबीच तहां मतिरामअके

छोड़आवैं ॥ आपने आनन चन्दकी चांदनी सों पहिले तनताप बुझावैं । कूल कलिन्दी के कुंजन मंजुल मीठे अमोल वै बोल सुनावैं । ज्यों हँसि हेरिलियो हियरा हरित्यों हँसि जो हियरे हरिलावैं २ ॥ दोहा ॥ काम कहाकुल कानिसों लोकलाज किन जाय । कुंजबिहारी कुंजमें मिलैं मोहिं मुसक्याय ३ ॥ अथ स्मृति लक्षण । दोहा ॥ सखी सुनी प्रियबात को जो सुमिरन मनहोय । स्मृति तासों कवि कहत हैं सबरस ग्रन्थ बिलोय ४ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त आलस वलत कोरों काजर कलित मतिराम वै ललित अति पायन धरत हैं । पंकजते सरसैंह खंजन जुरन को गरब ते मृगिन ते दृगानि दरशतहैं । परुनिस घनंबंक तीक्षण कटाक्ष बड़े लोचन बिशाल उर पीरहिं करतहैं । गाढ़े ह्वै पड़ेहैं न निसारे निसरत से नं बानसे बिसारे न बिसारे बिसरत हैं ५ ॥ दोहा ॥ शोभासों रति सुन्दरी न बस नेहसों बाम । तनबूड़त मन प्रीति में रँग बूड़त मन श्याम ६ ॥ अथ गुणवर्णन । दोहा ॥ बिरहबीच जो पीय को सुन्दरता

बिसराय । गुणवणन तासों कहत जे प्रवीण कविराय ७ ॥ अथ उदाहरण । सवैया मोर पंखी मतिराम किरीट में कण्ठवती बनमाल सुहाई । मोहनकी मुसक्यान मनोहर कुण्डल लोलनि में छबिछाई । लोचन लोल बिशाल बिलोचनि को न बिलोकि भयो वशमाइ । वामुखकी मधुराई कहा कहौं मीठी लगै अंखियानि लुभाई ८ ॥ दोहा ॥ शरद चन्दकी चांदनी नारि डारि किनमोहिं । वामुखकी मुसक्यानि सरि कबहुं कहौं नहिं तोहिं ९ ॥ अथ उद्वेगलक्षण । दोहा ॥ बिरहबिथाकी बिकलता जहां कछु न सोहाय । ताहिकहत उद्वेगहैं जेप्रवीणकविराय १० ॥ अथ उदाहरण । सवैय ॥ चाहि तुम्हें मतिराम रसाल परी तिय के तनमें पियराइ । कामके तीक्षण तीरनसों भरिमारत नीरभयो हियराइ । मेरे बिलोकिबे को उत कण्ठत कंठलौं आयरह्यो जियराई । नेकुपरे न मनोज के ओजनि से जस रोजन में सियराई ११ ॥ दोहा ॥ जे अंगन पिय संगमें बरषतहूते पियूष । ते बिछुरे बिछुराक से भये मयंक मयूष १२ ॥

अथ प्रलापलक्षण। दोहा ॥ उत कण्ठाते कहत हैं जहां मोहमय बैन। बरणत जहा प्रलाप हैं जे प्रबीण रस ऐन १३ ॥ अथ प्रलापउदाहरण ॥ कवित्त ॥ कहियो सँदेशो प्राणप्यारीसों गवंन कीन्हों बिक्रम बिलासजेवें आपने परसके। चन्दकर बरछीनि छेदितीरतीक्षणसोंहारिगो मनोज मोहिकछु नाहिकै सके। कवि मति-राम याकुलिश के धाइकहूं मान तुमको-किल कोकूकनि निरसके। कैसे दरकत मेरो हियो सदा सहिरह्यो तेरेकुच निपट कठोर निसरसके १४ ॥ दोहा ॥ बिकल लालको वालतू क्यों न बिलोकति आन॥ बोलि को किलिनिसों कहैंबोलि तिहारे तानि १५ ॥

अथ उन्मादलक्षण। दोहा ॥ उतकण्ठाते मोहमयवृथा कहत कछुकाज। ताहि कहत उन्मादहैं कबि कोबिंद शिरताज १६ ॥ अथ उदाहरण। सवैया ॥ जाक्षणते मतिराम कहूं मुसक्यात कहूं निरख्यो नँद लालहि। ताक्षणते क्षणही क्षणमें क्षणबाढि बिथाह बियोग कि बाल-हि। पूँछतिहै किशलयकर सों गहि बूझति श्याम शरीर गोपालहि। भोरी भईहै मयंक

मुखी भरि भेंटतहै भुज अंकतमालहि १७॥
दोहा ॥ रोय उठै क्षण उठिहँसै क्षण उठिचलै
रिसाय। बैरी करी बनाइते लायक रूप
ठगाय १८ ॥ अथ व्याधलक्षण । दोहा ॥ काम पीरते
पियरही ताप दूबरीहोय । तासों व्याधि
बखानिहैं कबि कोबिद सबकोय १९ ॥ अथ
उदाहरण । कवित्त ॥ बरषासी लागी निशि वासर
बिलोकनि को वारि परवाह भयो नावनि
उतरिबो। रह्योजात कौनपै सुकबि मतिराम
अब बिरह अनलज्वालजालनि से जरिबो ।
जैयतसे मोपै को उड़ैयत उसासनिसों हम
को तो भयोउत हेरत हहरिबो । कियोक-
हा चाहतसो कहो न कुँवर कान्ह रह्यो अब
बाको उपचारनको करिबो २० ॥ दोहा ॥
देखि परै नहिं दूबरी सुनिये श्याम सुजान ।
जानिपरै परियङ्कमें अंगआंच मतमान २१
अथ जड़तालक्षण । दोहा ॥ उत्कंठादिकते जोहै अ-
चल चित्त अरुअंग । तासों जड़ता कहत
हैं जेप्रबीण रसरंग २२ ॥ अथ उदाहरण । कवित्त ॥
सूंघै न सुवासरहै रंगरागते उदास भूलगई
सुरति सकल खान पानकी । कबिमतिराम

इकटक अनमिष नैन बूझे न कहत बात अरु समझेन आनकी। थोरीसी हँसनि ओट गोरीऐसी डारी ठग बौरीकरी गोरीतें किशोरी वृषभानकी। तबते बिहारीवह है भई बखान कैसी जबते निहारी रुचि मोरके पखानकी २३ ॥ दोहा ॥ अनमिष लोचन बालके याते नन्द कुमार। मीचगई जरि बीचही बिरहानलकी झार २४ ॥ समुझि समुझि सबरीझिहैंसज्जन सुकवि समाज॥ रसिकनकेरसको कियोनयो ग्रन्थरसराज २५ ॥

इतिश्रीरसराजग्रन्थ समाप्तः ॥

हरप्रकार की पुस्तकें निम्नलिखित दोनों पतोंपर मिलसकती हैं।

पुस्तकें मिलने का पता—

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजी

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बारावंकी

दूसरापता

सेठ टीकाराम—सुक्खीलाल बुकसेलर

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बारावंकी

रामचरितमानस रामायण

जिस्में श्रीरामचन्द्र आनन्दकन्द भक्त भयहारी अवधबिहारीजी की लीला भली भाँति से परमोपासिक श्रीगुसाईं तुलसीदास जीने दोहा चौपाई व अनेक बिचित्र२छन्दों में बिरचित किया है उसी अपूर्व ग्रन्थ में बहुतसी क्षेपक धूर्त लोगोंने अपनी बड़ाईके लिये लगादी हैं परन्तु हमने श्रीरसिकशिरोमणि तुलसीदासजी की हस्तामलक पुस्तक से संशोधित करके भगवद्भक्तोंके अवलोकनार्थ बहुतही शुद्ध और स्पष्टाक्षरोंमें निर्मित कराके छापीहै आशाहै कि विद्वज्जन हमारी संशोधित रामायण के ग्राहकहोकर परिश्रम को सफल करेंगे मूल्य सिर्फ १।)

पद्मासुन्दरी।

यह उपन्यास अतिउत्तम है जिसको कृत्तिवासीय रामायणके भाषाछंद रचयिता श्रीयुत पं० मथुराप्रसादजी ने बंगभाषा से हिंदीभाषा में अनुवादित कियाहै मूल्य।

विदित हो कि हमारे यहां की पुस्तकें निम्नलिखित दोनों पतोंपर मिलसक्ती हैं और अलावा इसके कलकत्ता बम्बई आदि अन्य प्रेसोंकी पुस्तकें मौजूद रहती हैं जिन महाशयों को किसी पुस्तक की अवश्यकता हो वे पत्र भेजकर शीघ्रता से प्राप्त करसकते हैं।

पुस्तकें मिलने का पता—

प्रोप्राइटर सेठ टीकारामजी

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बाराबंकी

दूसरापता

सेठ टीकाराम-सुक्खीलाल बुकसेलर

"ज्ञानभास्कर प्रेस" बाराबंकी